RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹: 30

प्रेरणा विचार

जनवरी-2024 (पृष्ठ-36) गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

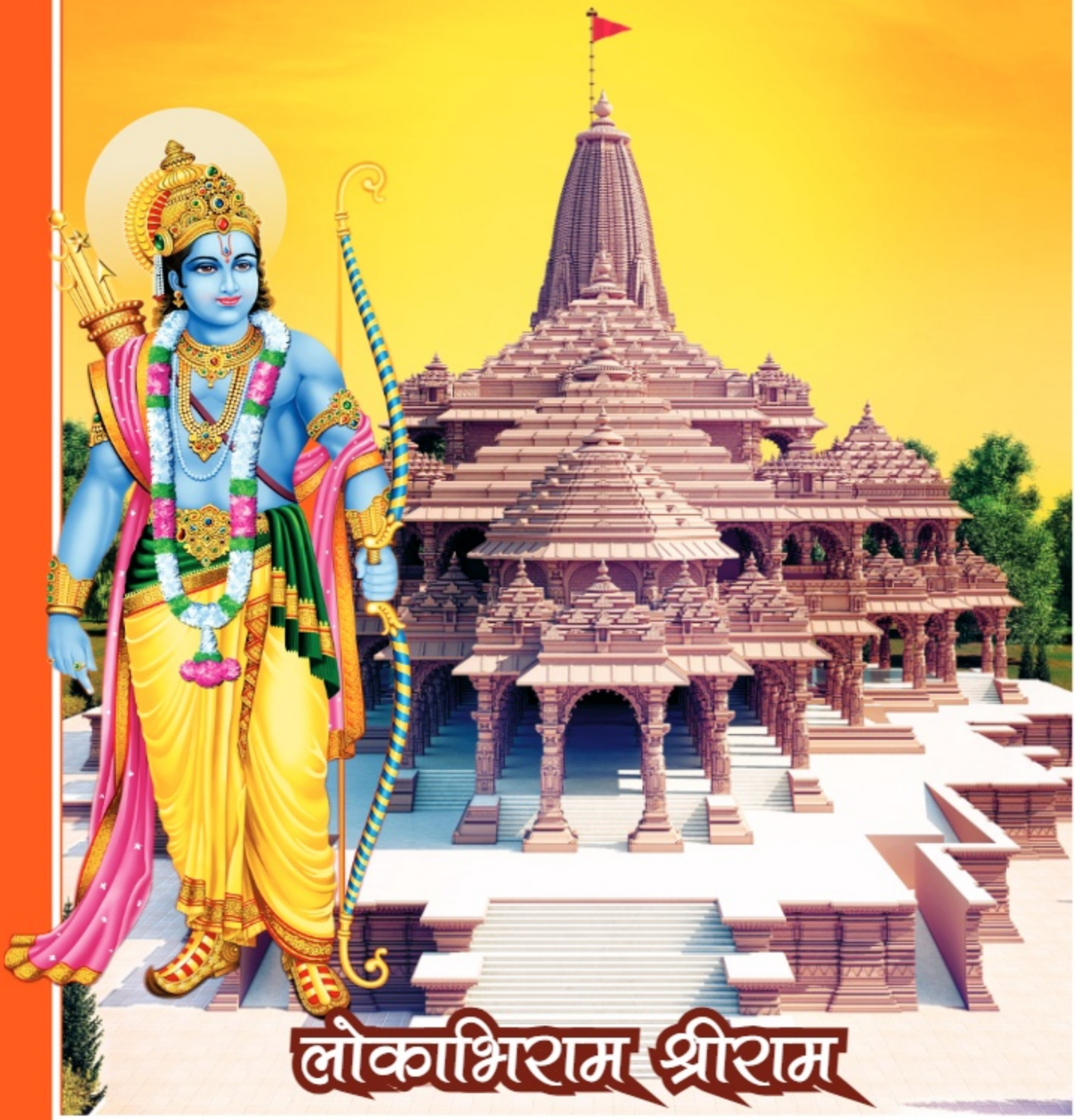

लोकाभिराम श्रीराम

प्रेरणा विमर्श – 2023 'स्व' भारत का आत्मबोध

उद्घाटन समारोह

भारत को समझने के लिए पहले भारत को पढ़ने की जरूरत है। दुनिया को पढ़कर भारत को नहीं समझा जा सकता। भारत को पढ़ कर ही स्व को समझा जा सकता है। ये बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख रामलाल ने कही, प्रेरणा विमर्श –2023 के उद्घाटन सत्र में 15 दिसंबर को। उन्होंने कहा कि स्व का अर्थ राष्ट्र है, राष्ट्र धर्म है। भारत की सोच एक है, भारत की संस्कृति एक है। उत्तर से दक्षिण तक हम एक हैं, भारत के लिए पूरी दुनिया एक परिवार है। हिन्दुत्व का अर्थ समझाते हुए उन्होंने कहा है कि हिन्दुत्व का अर्थ है सबका कल्याण। हिन्दुत्व में विश्व कल्याण की बात है। भारत सबके सुख और कल्याण की बात करता है, इसलिए वह संकुचित नहीं हो सकता। लोकसभा सांसद, मनोज तिवारी और पत्रकार नरेंद्र भदौरिया ने दीप प्रज्ज्वलित कर तीन दिवसीय कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। प्रेरणा विमर्श –2023 कार्यक्रम की शुरुआत नारी शक्ति राष्ट्र वन्दन यज्ञ से हुई। नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ का संचालन मुख्य आचार्य संस्कृत युवा आदर्श समिति की सचिव प्रवीण विद्या अलंकार ने किया। कन्या गुरुकुल हाथरस की 11 ब्रह्मचारिणियों ने अपनी शिक्षिका सुमन के साथ मंच का संचालन किया। हजारों माताओं, बहनों की राष्ट्र वंदन यज्ञ में भागीदारी रही। साहित्य उत्सव और राष्ट्र बोध, नारी सशक्तिकरण व स्व जागरण को प्रदर्शित करती प्रदर्शनी का भी अनावरण भी हुआ।

उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलन करते अतिथि गण

नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ में माताएं एवं बहनें

लोकसभा सांसद, मनोज तिवारी

रा. स्व. संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख, रामलाल

प्रेरणा विचार पत्रिका का विमोचन

सभागार में उपस्थित दर्शकगण

प्रेरणा विचार

वर्ष -2, अंक - 1

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
मधुसूदन दादू

सलाहकार मंडल
श्री श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
राम जी तिवारी

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन सी-56/20 सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास,
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851,
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

स्वधर्म व स्वजनों के धर्म के रक्षक हैं, राम 06

प्राचीन भारत में शून्य और अनंत की अवधारणाएं 12

अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद जम्मू-कश्मीर 14

गौ विज्ञान अनुसंधान केंद्र गाय की उपयोगिता सिद्ध करेगा - मोहन भागवत 17

सप्तपुरियों में सर्वोपरि अयोध्या.....05

हर घर बने अयोध्या.....08

वनवासियों एवं वंचितों के करीब थे श्रीराम.....10

धर्म और विज्ञान पर विवेकानंद का चिंतन.....16

चीन ने बदली चाल.....18

प्रेरणा विमर्श 2023 'स्व' भारत का आत्मबोध.....20-27

मकर संक्रांति के विविध रूप.....28

डीपफेक : गुमराह होता समाज.....30

विशेष समाचार.....31

क्या आप जानते हैं?.....32

हर दिन पावन.....33

राम अनंत अनंत गुन अमित कथा विस्तार

विश्व के इस अतुलनीय एवं बलिदानी संघर्ष वाले आंदोलन को 1857 के महासमर के पश्चात श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति अभियान के रूप में चलने वाले इस आंदोलन को 'अद्वितीय चरण' कहना सर्वथा उचित है। हालांकि भारत में विदेशी शासन की नीतियों के विरुद्ध भी समाज के प्राय: सभी वर्गों के संघर्ष-आंदोलन हुए हैं जिनमें संन्यासियों का योगदान अतुलनीय रहा है। किन्तु, देश के हिन्दू समाज व संतों के मार्गदर्शन में चलने वाला यह एक वैश्विक आंदोलन था जो कल्पना से भी परे और संकल्प की पराकाष्ठा का जीवंत उदाहरण बना।

श्री राम अनन्त हैं, उनके गुण भी अनन्त हैं और उनकी कथाओं का विस्तार भी असीम है। इतिहास में राम नीतिमान राजा हैं और शास्त्रों में नाराणावतार। जबकि राम की लोक में व्याप्ति ब्रह्म के रूप में है, और वह लोक चेतना के पर्याय हैं। लोक के लिए राम राजा ही नहीं, आचार्य भी हैं। राम सृजन हैं, प्रकृति हैं और लोक के हर मंगल, शुभ व शिव का पर्याय भी राम हैं। राम ब्रह्म वादियों के ब्रह्म हैं। निर्गुणवादी संतों के आत्माराम हैं। ईश्वरवादियों के ईश्वर हैं। बौद्ध जातक कथाओं में वे किसी दूसरे रूप में हैं। वहीं ऋषि वाल्मीकि के 'रामायण' में अगर उनका एक रूप है, तो 'योगवाशिष्ठ' में दूसरा। 'कम्ब रामायण' में अगर वे दक्षिण भारतीय जनमानस को भावविभोर करने वाले राम हैं तो तुलसी के राम उत्तर भारत में घर-घर में पूज्य हैं। यानी राम सृष्टि के कण-कण में हैं, और जन-जन के हैं। अनंत, अविनाशी, अकलपनीय राम सर्वव्यापक हैं और सभी के आस्था के प्रतीक हैं। करोड़ों लोगों की सांस व रोम-रोम में राम बसे हैं। भारत का कण-कण राममय है। राम के सनातनी प्रेमियों, संतों व सामाजिक संगठनों के मार्गदर्शन के फलस्वरूप राम मंदिर निर्माण सम्भव हुआ। अयोध्या में नवनिर्मित श्रीराम मंदिर भारतीय संस्कृति की समृद्धि विरासत का प्रतीक होगा। जिसके प्राण प्रतिष्ठा का एक गौरवशाली क्षण और अमृततत्व चिरकाल तक भावी पीढ़ियों के मन मस्तिष्क में अंकित रहेगा।

रामनाम कल्पवृक्ष समान है। तभी तो समय और काल से परे विभिन्न कालखंड में रामायण और रामकथा पर देश-विदेश में 1000 से अधिक ग्रंथ लिखे गये हैं। वेद, उपनिषद, ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण और पुराण (हरिवंश पुराण, वायु पुराण, विष्णु पुराण, भागवत पुराण, अग्नि पुराण, लिंग पुराण, पदम पुराण) इत्यादि में श्रीराम कथा का अनंत विस्तार है। बौद्ध धर्म में दशरथ जातक, अनामक जातक एवं अन्य जातक कथाओं में तथा जैन धर्म में विमलसूरि कृत-पदम चरित्र आदि में श्रीरामकथा का वर्णन है। युग परिवर्तित होते रहे, सामाजिक रूपरेखा, जीवन-शैली परिवर्तित होती रही, परंतु 'राम' नाम के प्रति आस्था एवं विश्वास में निरंतर वृद्धि होती रही। तभी तो श्रीराम कथा एवं रामायण दुनिया में अनेक भाषाओं में लिखी गयी है। गौरतलब है कि राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक रामलला के मंदिर के लिए श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन का इतिहास सामाजिक संगठनों के नेतृत्व में देश के लाखों साधु संतों-महात्माओं के मार्गदर्शन में चलाया गया। यह दीर्घकालिक त्याग और समर्पण का आंदोलन था। जिसमें लाखों रामभक्तों ने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। विश्व के इस अतुलनीय एवं बलिदानी संघर्ष वाले आंदोलन को 1857 के महासमर के पश्चात श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति अभियान के रूप में चलने वाले इस आंदोलन को 'अद्वितीय चरण' कहना सर्वथा उचित है। हालांकि भारत में विदेशी शासन की नीतियों के विरुद्ध भी समाज के प्राय: सभी वर्गों के संघर्ष-आंदोलन हुए हैं जिनमें संन्यासियों का योगदान अतुलनीय रहा है। किन्तु, देश के हिन्दू समाज व संतों के मार्गदर्शन में चलने वाला यह एक वैश्विक आंदोलन था, जो कल्पना से भी परे और संकल्प की पराकाष्ठा का जीवंत उदाहरण बना। यही कारण है कि आज जब अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण अपनी पूर्णता की ओर है। मंदिर में रामलला के पुनर्प्रतिष्ठा का समय निकट है तो विश्व समुदाय ने भी समर्थन, सहयोग एवं पूजा-सामग्रियां भेजकर अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं। क्योंकि -

सबहि सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा।।

राम जी तिवारी

सप्तपुरियों में सर्वोपरि अयोध्या

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का अमृतत्व भारत सहित पूरी दुनिया में पारिवारिक एवं सामाजिक आदर्शों व मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए अनंतकाल तक संजीवनी के रूप विराजमान रहेगा। साथ ही भारत की सनातन संस्कृति और समरस समाज जीवन के प्रवाहमान में भी निर्णायक भूमिका निभाएगा।

22 जनवरी 2024 के दिन करोड़ों रामभक्तों की चिर साध पूरी होगी। इस दिन का पिछले 500 वर्षों से भारतवासियों समेत विश्व के कोने-कोने में बसे सभी सनातन प्रेमियों ने इंतजार किया। न जाने कितने साधु संत राम मंदिर की अभिलाषा लिए महाप्रयाण कर गये। लेकिन उनकी तपस्या और त्याग का ही प्रभाव और प्रतिफल है कि आज वह मंगलमय अवसर आया। बात अगर प्रभु राम और अयोध्या नगरी की करें तो यह धर्मशास्त्रों के अनुसार त्रेतायुग की है। वहीं वैज्ञानिक, साहित्यिक और ऐतिहासिक साक्ष्यों के परिप्रेक्ष्य पर दृष्टिपात करने पर हजारों प्रमाण भी इसके साक्षी हैं। वेद, उपनिषद, पुराण, जैन, बौद्ध धर्म समेत अनगिनत प्राचीन ग्रंथों, साहित्यों एवं लोककथाओं में प्रभु श्री राम और रामनगरी अयोध्या का वर्णन है। कुछ वर्णन निम्नलिखित हैं।

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरोध्यया !
तस्यां हिरण्यमयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।

– अथर्व वेद

अयोध्या नाम तत्रास्ति नगरी लोक विश्रुता।
मनुना मानवेन्द्रेण या पुरा निर्मिता स्वयम्॥
आयता दश च द्वे च योजनानि महापुरी।
श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा नानासंस्थानशोभिता॥

-(महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण के बालकाण्ड में वर्णन)

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका।
पुरी द्वारवती ज्ञेया सप्तैता मोक्ष दायिकाः।

– गरूण पुराण

अकारो ब्रह्म च प्रोक्तं यकारो विष्णुरुच्यते॥
धकारो रुद्ररूपश्च अयोध्यानाम राजते।

-स्कन्दपुराण का वैष्णवखंड

महाभारत के समय तक अयोध्या लगातार सूर्यवंशियों की राजधानी रही। इस तरह अयोध्या कितनी बार बसी और कितनी बार उजड़ी इसके ऐतिहासिक सूत्रों को एक साथ पिरोना कठिन अभ्यास है। समयांतराल में कलियुग का प्रभाव बढ़ता गया वैसे-वैसे अयोध्या का स्वरूप और दशा बराबर बदलती रही। 600 ईसा पूर्व प्राचीन जैन-धर्म के अनेक ग्रंथों में अयोध्या का वर्णन है। यथा जैन के प्रामाणिक ग्रन्थ आदिपुराण जिसे विक्रम संवत की आठवीं शताब्दी में जिन सेनाचार्य ने संस्कृत में रचा था। इसके बारहवें अध्याय में अयोध्या का वर्णन है। इसी तरह जैन धर्म के ग्रंथ आदि पुराण में लिखा है कि विश्व की कर्मभूमि में अयोध्या पहला नगर है। जिसके सूत्रधार इन्द्रदेव और देवताओं द्वारा बनायी गयी नगरी के रूप में है।

इस तरह जैन एवं बौद्धों के समय अयोध्या का महत्व बना रहा। चीनयात्री के लेख से भी अयोध्या की तत्कालीन स्तिथि के बारे में जानकारी मिलती है। बौद्ध ग्रंथों में अयोध्या को साकेत और विशाखा कहने के प्रमाण हैं। कालांतर में ईस्वी सन् से 57 वर्ष पूर्व उज्जैन के राजा विक्रमादित्य द्वारा अयोध्या के जीर्णोद्धार का जिक्र भी साहित्यों में है।

इस तरह इतिहास के पन्नों में दर्ज अयोध्या के अनेक अकाट्य प्रमाणों पर जमी कुदृष्टि रूपी धूल को हटाने में नौ नवंबर, 2019 और 22 जनवरी 2024 की तिथियों का अद्वितीय महत्व है। क्योंकि जब राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' और न्यायपालिका की टैग लाइन "यतो धर्मो ततो" है तो यह तिथि अपरिहार्य ही थी। इस तरह सदियों बाद इतिहास के पन्नों से एक कलंक का अंत हुआ। और चार वर्ष पूर्व अवतरित इस तिथि ने न केवल रामजन्मभूमि, बल्कि संपूर्ण अयोध्या की दिशा और दशा बदल दी। अब रामजन्मभूमि पर रामलला के विराजमान होने में कुछ दिन शेष हैं। 22 जनवरी 2024 का दिन सनातन संस्कृति के इतिहास में एक स्वर्णिम दिन और अध्याय के रूप में अंकित रहेगा, जब भव्य मंदिर के दिव्य गर्भगृह में रामलला विराजेंगे।

ऐसे में वह अयोध्या, जहां जन्मे भगवान राम सृष्टि के कण-कण में हैं, जो सनातन संस्कृति की आत्मा हैं, उस देश में अयोध्या की राम जन्मभूमि को रामलला का जन्मस्थान सिद्ध करने में पांच सौ वर्ष लग जाएं तो इससे बड़ी विडंबना और कुछ नहीं। इसलिए बड़े त्याग, समर्पण के बाद प्राप्त कलियुग में इस त्रेतायुग के अहसास को आह्लादित, आनंदित और भाव विभोर होकर राम रस का पान किया जाए। ■

स्वधर्म व स्वजनों के धर्म के रक्षक हैं, राम

राम का जीवन स्वधर्म की कसौटी है। उनका धर्म 'अविरोधी' है। सच्चा धर्म अविरोधी ही होता है। इसलिए राम के धर्म पालन में कोई टकराव नहीं है, कोई संघर्ष नहीं है। उनका टकराव सिर्फ अधर्म से है। धर्म का परस्पर संघर्ष हो ही नहीं सकता, जहां संघर्ष दिखता है वहां धर्म नहीं धर्माभास है। राम स्वधर्म पर प्रतिबद्ध हैं, इसलिये वह स्वजनों की रक्षा व उनके धर्म की रक्षा करने में समर्थ हैं। जब भारत, श्रीरामजन्मभूमि के भव्य जीर्णोद्धार का साक्षी बन रहा है तो उसे राम की तरह स्वधर्म पालन और स्वजनों के धर्म रक्षा का संकल्प करना चाहिए।

डॉ. अरुण प्रकाश
विचारक एवं लेखक

भगवान राम का चरित्र बहुआयामी है। भारतीय चिंतन में कोई एकांगी, एकमुखी चरित्र मर्यादा पुरुषोत्तम हो भी नहीं सकता। राम अनेक संबंध-संवेगों की कसौटी तो हैं ही, न्याय और धर्म का अधिष्ठान भी हैं। संबंध-संवेगों का जो कुछ भी अनभिव्यक्त है, वह राम से प्रकाशित होता है। इतिहास में राम नीतिमान राजा हैं और शास्त्रों में नाराणावतार। जबकि राम की लोक में व्याप्ति ब्रह्म के रूप में हैं, और वह लोक चेतना के पर्याय हैं। लेकिन यहां शास्त्रीय स्वीकार्यताओं को नकार नहीं है। लोक के लिए राम राजा ही नहीं, आचार्य भी हैं। अनुशासन का जिम्मा आचार्यों का ही होता है- इसीलिए लोक का संकल्प है, 'जाही 'विधि' राखें राम, ताही 'विधि' रहिये।' लोक में बच्चा-बच्चा राम है। जन्म (सृजन) प्रकृति का उत्सव है, और राम लोक के हर मंगल, शुभ व शिव का पर्याय हैं। लोक के गीतों में विवाह के समय सजकर खड़ा हर दूल्हा 'रामचंद्र' का ही प्रतिरूप है,और वसंतोत्सव में होली भी रघुबीर ही खेलते हैं। जो लोग अवध प्रान्त के लोक-जीवन से परिचित होंगे, वह जानते होंगे कि आप किसी व्यक्ति को एक काम सौंपे, लेकिन उसे ऐसा नहीं करना है, तो अमुक व्यक्ति कहेगा, "हमरे राम ऐसा न करिहैं (मेरे 'राम' ऐसा नहीं करेंगे)।" यानी वह अपने अस्तित्व को ही राम मानता है। यह सामान्य वार्तालाप में आप देख सकते हैं। इसी तरह से जो पत्नियां अपने पति का नाम नहीं लेती, वह भी उन्हें 'हमरे राम' कहकर संबोधित करती हैं। यानी जो कुछ अकथ है वह भी राम है। लोक में राम की व्याप्ति घट-घट से लेकर मरघट तक है। और उनकी आध्यात्मिक प्राप्ति ब्रह्म तक। लोक में कुछ दिख रहा है, और जो कुछ घट रहा है सबके माने राम तो हैं ही, साथ ही जो कुछ अकथ है, अनिर्वचनीय है, यानी जिसे कहा नहीं जा सकता, उसकी कथनीयता, उसका निर्वचन भी राम ही हैं।

राम के चरित्र में कुछ भी छोड़ने लायक नहीं है, अलबत्ता उनके चरित्र को सम्यकता में देखना व स्वीकारना ही उनका सम्मान है। उनके चरित्र के किसी एक आयाम को अपनाना या प्रतिष्ठित करना, उनकी 'ब्रह्म परमारथ रूपा' प्रतिष्ठा को मलिन करने का अपराध करना है। किंतु यदि ऐसा सायास न हो, तो बुद्धि की सीमा जहां तक देख सके, उसे देखने की छूट भी यहां हैं। प्रभु मूरति देखी, तिन्ह तैसी, भावना की सीमा में सुलभ है। भावना कैसी होगी, जैसा सिद्ध धरातल होगा। ऐसी भावना की सीमा में लेखक को

राम स्वधर्म के रक्षक, स्वजनों के धर्म के रक्षक दिखते हैं।

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिताः।
वेदवदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे चः निष्ठितः।।

राम स्वधर्म की रक्षा तो करते ही हैं स्वजनों के भी धर्म की रक्षा करते हैं। राम के लिए स्वजन कौन हैं, इसका अर्थ किंचित उनके सम्बंधियों तक सीमित नहीं करना चाहिए। हालांकि, स्वजनों के धर्म रक्षा की परख में उनकी चर्चा हो सकती है। राम के स्व की सत्ता में समग्र समाहित है। राम के स्व की संवेदना ऐसी है कि उसमें खग, मृग, शिला, संत सबका कल्याण निश्चित है। यही राम का स्वधर्म पालन है। राम उनके धर्म की भी रक्षा करते हैं, जो स्वधर्म पालन से विमुख हो रहे हैं, या अक्षम हैं। महाराज दशरथ जिन वचनों से बंधे हैं मोहवश वह भी उसका पालन नहीं करना चाहते हैं। किंतु, वन के लिए प्रस्थान कर उनके धर्म की रक्षा करते हैं। राम शबरी से लेकर अहल्या तक के स्वधर्म की रक्षा करते हैं। राम का जीवन उस महान सत्य की उद्घोषणा है कि किसी का उद्धार स्व का उद्धार है, किसी का संहार स्व का संहार है। कल्याण की कामना ही स्व का सत्कार है। मनुष्य में दो प्रकार की इच्छाएं रहती हैं 'सांसारिक' अर्थात् भोग एवं संग्रह की इच्छा और 'पारमार्थिक' अर्थात् अपने कल्याण की

राम शबरी से लेकर अहल्या तक के स्वधर्म की रक्षा करते हैं। राम का जीवन उस महान सत्य की उद्घोषणा है कि किसी का उद्धार स्व का उद्धार है, किसी का संहार स्व का संहार है। कल्याण की कामना ही स्व का सत्कार है।

इच्छा। इसमें भोग और संग्रह की इच्छा 'परधर्म' अर्थात् शरीर का धर्म है; क्योंकि असत् शरीर के साथ सम्बन्ध जोड़ने से ही भोग और संग्रहकी इच्छा होती है। अपने कल्याणकी इच्छा 'स्वधर्म' है; क्योंकि परमात्मा का ही अंश होने से स्वयं की इच्छा परमात्मा की ही है, संसार की नहीं। इसीलिए राम 'परमारथ रूपा ब्रह्म' हैं।

राम का चरित्र किसी उपदेश, प्रेरणा या प्रभाव से अलिप्त दिखता है क्योंकि स्वधर्म का पालन करने में मनुष्य स्वतन्त्र है; क्योंकि 'स्व' कल्याण करने में शरीर, इन्द्रियां मन, बुद्धि आदि की आवश्यकता नहीं है, प्रत्युत इनसे विमुख होने की आवश्यकता है। परंतु परधर्म का पालन करने में मनुष्य परतन्त्र है; क्योंकि इसमें शरीर, इन्द्रियां, मन, बुद्धि, देश, काल, वस्तु, व्यक्ति आदि की आवश्यकता है। स्वामी रामसुखदास कहते हैं कि स्वधर्म अविनाशी और परधर्म नाशवान् है। त्याग (कर्मयोग), बोध (ज्ञानयोग) और प्रेम (भक्ति-योग) ये तीनों ही स्वतः सिद्ध होने से स्वधर्म हैं। स्वधर्म में अभ्यास की जरूरत नहीं है; क्योंकि अभ्यास शरीर के सम्बन्ध से होता है और शरीर के सम्बन्ध से होने वाला सब परधर्म है। योगी होना स्वधर्म है और भोगी होना परधर्म है। निर्लिप्त रहना स्वधर्म है और लिप्त होना परधर्म है। सेवा करना स्वधर्म है और कुछ भी चाहना परधर्म है। प्रेमी होना स्वधर्म है और रागी होना परधर्म है। निष्काम, निर्मम और अनासक्त होना स्वधर्म है एवं कामना, ममता और आसक्ति करना परधर्म है।

राम का जीवन स्वधर्म की कसौटी है। उनका धर्म 'अविरोधी' है। सच्चा धर्म अविरोधी ही होता है। इसलिए राम के धर्म पालन में कोई टकराव नहीं है, कोई संघर्ष नहीं है। उनका टकराव सिर्फ अधर्म से है। धर्म का परस्पर संघर्ष हो ही नहीं सकता, जहां संघर्ष दिखता है वहां धर्म नहीं धर्माभास है। राम स्वधर्म पर प्रतिबद्ध हैं, इसलिये वह स्वजनों की रक्षा व उनके धर्म की रक्षा करने में समर्थ हैं। जब भारत, श्रीरामजन्मभूमि के भव्य जीर्णोद्धार का साक्षी बन रहा है तो उसे राम की तरह स्वधर्म पालन और स्वजनों के धर्म रक्षा का संकल्प करना चाहिए। ■

हर घर बने अयोध्या

रमेश शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

पांच सौ वर्षों के निरंतर संघर्ष के बाद रामलला अपने जन्मस्थान अयोध्या में पुनः प्रतिष्ठित होने जा रहे हैं। यह अवसर केवल एक महातीर्थ की प्रतिष्ठापना का नहीं है अपितु यह संकल्प लेने का भी है कि हर घर अयोध्या बने। तभी भारतीय समाज जीवन और राष्ट्र स्व पुनर्प्रतिष्ठित हो सकेगा।

अपने जन्मस्थान अयोध्या में रामलला की प्रतिष्ठापना हर भारतीय के लिए गौरव का क्षण है। पांच सौ वर्षों में कितनी पीढ़ियां संघर्ष करते और यह सपना संजोये संसार से विदा हो गईं कि वे यह आनंददायी दृश्य देख सकें। आज की पीढ़ी सौभाग्यशाली है कि वह अमरत्व के इन मनोहारी क्षणों की साक्षी बन रही है। इस आनंद और उत्सव के क्षण के साथ ही यह संकल्प लेने का भी समय है कि उन परिस्थितियों की पुनरावृत्ति न हो जिनके चलते पांच सौ वर्षों के इस संघर्ष की स्थिति बनी। और रामराज्य जैसी एक आदर्श राज्य व्यवस्था पराधीनता के घोर अंधकार में बदल गई। लेकिन अब रामराज्य स्थायी बने उसके लिए अयोध्या की संपूर्णता आवश्यक है। अयोध्या केवल एक नगर का नाम नहीं अपितु जीवन की संपन्नता, सुरक्षा, स्नेह और सद्भाव का एक संदेश है। आने वाली पीढ़ी के लिए क्या आवश्यक है इसका मार्ग वर्तमान पीढ़ी ही बनाए, तभी रामराज्य की परिकल्पना सार्थक हो सकेगी।

रामराज्य की संकल्पना : रामराज्य विश्व की एक आदर्श शासन और समाज व्यवस्था है। इतिहास के पन्नों में इसका उल्लेख अर्थशास्त्र में चाणक्य ने भी किया है और शुंग साम्राज्य के संस्थापक पुष्यमित्र शुंग ने भी। यदि हम इतिहास के विवरण की चर्चा न करके केवल आधुनिक संदर्भों की चर्चा करें तो स्वाधीन और आत्मनिर्भर भारत के लिए रामराज्य को प्रतीक मानकर एक आदर्श राज्य व्यवस्था की कल्पना की थी। रामराज्य व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र जीवन के लिए एक आदर्श संकल्पना है। जिसमें सब सुखी हों, सभी जन निरामय हों। किसी को न कोई दैहिक संताप हो, न भौतिक और न कोई दैविक कष्ट हो। दैहिक संताप में केवल शरीर का रोग भर नहीं है। वे सभी संताप, तनाव और दर्द दैहिक माने गये हैं, जिनका शरीर के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। शरीर को केवल बीमारियों से ही कष्ट नहीं होता, आर्थिक संकट और मानसिक व्याधियों से भी शरीर को कष्ट होता है। यदि मतिभ्रम या नकारात्मक सोच से कोई विपरीत निर्णय लिया और समस्या आई, परिवार ही नहीं सामाजिक जीवन भी प्रभावित हुआ तो यह भौतिक संताप में माना जाता है। दैविक संताप का संबंध धरती, जल, अग्नि, आकाश और वायु पंचतत्वों से होता है। प्रकृति के प्रत्येक प्राणी का जीवन ही नहीं फल, फूल, पेड़, पर्वत नदी, सरोवर इन सभी का जीवन इन पांचों तत्वों के संतुलन से चलता है। इनके असंतुलन से आंधी, तूफान, बाढ़, भूकंप, और प्रलय आती है। यह संताप दैविक माने गये हैं। रामराज्य का समाज जीवन इन संतापों से परे होता है। सभी संतापों से परे समाज जीवन कोई कल्पना भर नहीं है। संकल्प शक्ति के साथ ऐसा जीवन जिया जा सकता है। यह बात हम सब जानते हैं कि संतुलित जीवन, उचित आहार, उचित शिक्षा, संस्कारित दिनचर्या, सकारात्मक विचार और जीवन शैली से मनुष्य की मानसिक और बौध्दिक क्षमता श्रेष्ठ बनती है, स्वास्थ्य उत्तम रहता है। ऐसा मनुष्य पुरुषार्थी और प्रतिभा संपन्न होता है। विसंगतियां उसके पास फटकती तक नहीं। उसकी जीवन शैली से आंतरिक समस्याएं उत्पन्न ही नहीं होतीं। यह एक ऐसे समाज जीवन की कल्पना है जिसमें व्यक्ति, परिवार और समाज के सामने आंतरिक समस्याएं तो उत्पन्न होतीं हीं नहीं यदि कोई बाह्य समस्या आई तो वह उसके समाधान में सक्षम होता है।

ऐसे सक्षम और संकल्पवान समाज रचना को रामराज्य और उनके निवास को 'अयोध्या' कहा गया है।

आदर्श जीवन शैली का पर्याय अयोध्या : अयोध्या किसी नगर या परिक्षेत्र का केवल नाम नहीं अपितु यह एक संपूर्ण समाज जीवन शैली का सिद्धांत है। एक ऐसी शैली जिसमें परंपराओं का पालन, संस्कार, स्नेह, सद्भाव, समृद्धि की संपूर्णता के साथ सुरक्षा के भी सभी प्रबंध हों। उसे 'अयोध्या' कहा गया है। व्याकरण की दृष्टि से देखें तो अयोध्या 'संज्ञा विशेषण' शब्द है अर्थात् ऐसा शब्द जो किसी स्थान या परिसर के नाम का संबोधन तो है और कुछ विशेषताएं भी हैं। इसकी शब्द रचना दो प्रकार की है और दो अर्थ भी। लेकिन दोनों अर्थ का आशय एक है। पहला अर्थ अयोध्या वह जो युद्ध से परे है। और दूसरा आयुध की विशिष्टता का। युद्ध के उपकरणों को आयुध कहा जाता है। तब प्रश्न उठता है कि यदि कोई स्थल युद्ध से परे है तो वहां आयुध श्रेष्ठता की आवश्यकता क्यों होगी। पर यह अर्धसत्य है। कोई समाज या राष्ट्र शांति का पुजारी हो सकता है। उसके सभी निवासी परस्पर स्नेह सद्भाव से रहते हैं पर बाह्य संकट आने पर उनका सामना कैसै होगा। जब भी कोई समाज या क्षेत्र की समृद्ध होती है तब बहुत से तत्वों का ध्यान आकृषित होता है। चोर लुटेरे घर में घुसकर संपत्ति हरण का प्रयत्न करते हैं। दुनियां ऐसे समाज समूहों से भरी पड़ी है जो न स्वयं चौन से जीते हैं और न दूसरों को जीने देते हैं। ऐसे तत्व सदैव शांत और समृद्ध क्षेत्रों में अतिक्रमण करते हैं या आक्रमण करते हैं। इसे भारत के इतिहास से आसानी से समझा जा सकता है। भारत इतना शिक्षित था कि विश्व गुरु कहा जाता है, इतना संपन्न था कि सोने की चिड़िया कहा जाता था। शांति का पुजारी ऐसा कि शांति और अहिंसा का संदेश पूरी दुनियां में पहुंचा। बस यहीं चूक हुई। सत्य, धर्म और शांति की रक्षा के लिए शस्त्र सामर्थ्य भी जरूरी होता है। रामजी इस सत्य को समझते थे। इसीलिए रामजी सदैव अपने कंधे पर धनुष बाण रखते थे। तापस वेष में वनयात्रा पर गये तो भी कंधे पर धनुष बाण लेकर। वनदास से लौटकर राज्याभिषेक पूजन पर बैठे तब भी धनुषबाण कंधे पर था। समागम में आये संतों के चरण पखारते समय धनुष बाण कंधे पर। राम चक्रवर्ती सम्राट थे। आसुरी शक्तियों का दमन हो चुका था। वे मानसिक और बौध्दिक दृष्टि से भी बहुत समृद्ध थे। राम शस्त्र और शास्त्र शिक्षा की सम्पूर्णता के साथ कुल की रीति, नीति और परंपराओं के प्रति समर्पित थे। उनके पालन में उन्हे प्राणों की परवाह भी नहीं थी। वे एक ऐसी आचार संहिता के पालन के प्रति संकल्पवान थे जो आन्तरिक और बाह्य दोनों प्रकार की सामर्थ्य से युक्त थी। यही रामराज्य है और जहां रामराज्य है उस परिक्षेत्र का नाम अयोध्या है। एक ऐसे समाज से युक्त जो आंतरिक और बाह्य समस्याओं का समाधान करने में सक्षम हो वह भी अपनी परंपराओं और रीति नीति के अनुपालन के साथ।

राम शस्त्र और शास्त्र शिक्षा की सम्पूर्णता के साथ कुल की रीति नीति और परंपराओं के प्रति समर्पित थे। उनके पालन में उन्हें प्राणों की परवाह भी नहीं थी। वे एक ऐसी आचार संहिता के पालन के प्रति संकल्पवान थे जो आन्तरिक और बाह्य दोनों प्रकार की सामर्थ्य से युक्त थी। यही रामराज्य है और जहां रामराज्य है उस परिक्षेत्र का नाम अयोध्या है।

हर घर में राम : राम हमारे आदर्श हैं और अयोध्या हमारा तीर्थ है। लेकिन इसकी सार्थकता तब होगी जब राम के आदर्श हमारे जीवन में होगें और अयोध्या की विशेषता हमारे घर में हो। कुल की परंपराओं का पालन, मर्यादित जीवन लेकिन श्रम, साधना और संकल्प के साथ। वे शस्त्र संचालन में भी उतने ही निपुण थे जितने शास्त्र ज्ञान में। उचित व्यक्ति से उचित व्यवहार और किसे गले लगाना किसे नहीं यह विवेक भी रामजी में था। और अयोध्या नगरी को देखिए, वह ऋषियों के आवागमन का केन्द्र थी अर्थात ज्ञान से संपन्न, समृद्धि इतनी कि किसी को अभाव नहीं, कोई भिक्षुक नहीं और सामरिक शक्ति इतनी कि शत्रु स्वप्न में अतिक्रमण करने का विचार न कर सकें।

राम का जीवन और अयोध्या नगर की रचना या शैली का स्वरूप आज के जीवन के लिए भी कितना आवश्यक है यह अब किसी से छिपा नहीं रह गया है। भारत की समृद्धि बढ़ने जीडीपी बढ़ने से कितनी घुसपैठ बढ़ने लगी है इसके आंकड़े अक्सर समाचारपत्रों में आते हैं। सनातनी परिवार अपनी श्रम साधना से प्रगति कर रहे हैं। बेटे-बेटियां टॉपर हो रहे हैं तब घरों में अतिक्रमण है। सनातनी परिवारों की व्यस्तता का लाभ उठाकर अवांछित तत्व बेटियों को भ्रमित कर रहे हैं। उनके मन मानस को ही नहीं कुल परंपराओं से भी विमुख कर रहे हैं। इसी प्रकार बेटों को पथभ्रष्ट करने के षडयंत्र भी चल रहे हैं। यदि हम राम को अपन आराध्य मानते हैं, राम हमारे आदर्श हैं तो हमें अपने बच्चों को, आने वाली पीढ़ी को संस्कारों और कुल परंपराओं से जोड़ना होगा। प्रगति करने का अर्थ कुल मर्यादा को त्यागना नहीं होता। उनका पालन करके आगे बढ़ना यही राम के जीवन का संदेश है। इसलिए आवश्यक है कि हम संकल्पवान बनें और अपने घर को संस्कार केन्द्र बनाएं। हमारे घर शिक्षा की दृष्टि से, आर्थिक संपन्नता की दृष्टि से, प्रगति की दृष्टि से तो समृद्ध हों ही साथ ही सुरक्षा की दृष्टि से समृद्ध हों। ताकि किसी का साहस हमारे घरों में अतिक्रमण करने या संक्रमण करने का साहस न हो। और यदि कोई दुस्साहस करता है तो उसे उसकी शैली में प्रति उत्तर दिया जा सके। ऐसे बौद्धिक, सामरिक और संपन्नता से सुरक्षित स्थान का नाम ही अयोध्या होता है। हमारा पूरा देश अयोध्या बने, हमारा प्रत्येक घर अयोध्या बने आज ऐसा ही संकल्प लेने की आवश्यकता है। ■

वनवासियों एवं वंचितों के करीब थे श्रीराम

प्रहलाद सबनानी
सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक

भारत के वनवासियों के रोम-रोम में प्रभु श्री राम बसे हैं। उन्हें प्रभु श्रीराम से अलग ही नहीं किया जा सकता है। प्रभु श्री राम की जड़ें आदिवासियों में बहुत गहरे तक जुड़ी हैं। अत: विदेशी मिशनरियों के कुत्सित प्रयासों को विफल करते हुए भारतीय संस्कृति पर हमें गर्व करना होगा।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि प्रभु श्री राम ने लंका पर चढ़ाई करने के उद्देश्य से अपनी सेना वनवासियों एवं वानरों की सहायता से ही बनाई थी। केवट, शबरी आदि के उद्धार संबंधी कहानियां तो हम सब जानते हैं। परंतु, जब वे 14 वर्षों के वनवास पर थे तो इतने लम्बे अर्से तक वनवास करते करते वे स्वयं भी एक तरह से वनवासियों के रंग में रंग गए थे। इन 14 वर्षों के दौरान, वनवासियों ने ही प्रभु श्री राम की सेवा शुश्रूषा की थी। प्रभु श्री राम भी इनके स्नेह, प्रेम एवं श्रद्धा से बहुत अभिभूत थे। इसी तरह की कई कहानियां इतिहास के गर्भ में छिपी हैं। यह भी एक कटु सत्य है एवं इतिहास इसका गवाह है कि हमारे ऋषि मुनि भी वनवासियों के बीच रहकर ही तपस्या करते रहे हैं। अतः भारत में ऋषि, मुनि, अवतार पुरुष, आदि वनवासियों, जनजातीय समाज के अधिक निकट रहते आए हैं। इस प्रकार, हमारी परम्पराएं, मान्यताएं एवं सोच एक ही है। जनजातीय समाज भी भारत का अभिन्न एवं अति महत्वपूर्ण अंग है।

आज भी भारत में वनवासी मूल रूप में प्रभु श्री राम की प्रतिमूर्ति ही नजर आते हैं। दिल से एकदम सच्चे, धीर, गम्भीर, भोले-भाले होते हैं। यह प्रभु श्री राम की उन पर कृपा ही है कि वे आज भी सतयुग में कही गई बातों का पालन करते हैं। परंतु, कई बार ईसाई मिशनरियों एवं कुछ विकृत मानसिकता वाले लोगों द्वारा वनवासियों को उनके मूल स्वभाव से भटकाकर लोभी, लालची एवं रावण का वंशज बताया जाता है। रावण स्वयं तो वनवासी कभी रहे ही नहीं थे। वे श्री लंका के एक बुद्धिमान राजा थे। इस बात का वर्णन जैन रामायण में भी मिलता है। जैन रामायण की तरह गोंडी रामायण भी रावण को पुलस्त्य वंशी ब्राह्मण मानती है, न कि आदिवासियों का पूर्वज, कुछ गोंड पुजारी रावण को अपना गुरु भाई भी मानते हैं, चूंकि पुलस्त्य ऋषि ने उनके पूर्वजों को भी दीक्षा दी थी।

भारतीय संस्कृति पर पूर्व में भी इस प्रकार के हमले किए जाते रहे हैं। भारत में समाज को आपस में बांटने के कुत्सित प्रयास कोई नया नहीं हैं। एक बार तो रामायण एवं महाभारत आदि एतिहासिक ग्रंथों को भी अप्रामाणिक बनाने के कुत्सित प्रयास हो चुके हैं। वर्ष 2007 में तो केंद्र सरकार के संस्कृति मंत्रालय के मातहत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने एक हलफनामा (शपथ पत्र) दायर किया था, जिसमें कहा गया था कि वाल्मीकि रामायण और गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस प्राचीन भारतीय शास्त्रों के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं, लेकिन इनके पात्रों को ऐतिहासिक रूप से रिकॉर्ड नहीं माना जा सकता है, जो कि निर्विवाद रूप से इनके पात्रों का अस्तित्व सिद्ध करता हो या फिर घटनाओं का होना सिद्ध करता हो। ये बातें कितनी दुर्भाग्यपूर्ण हैं। यह कहना कि प्रभु श्री राम और रामायण के पात्र (राम, भरत, लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण, सुग्रीव और रावण, आदि) ऐतिहासिक रूप से प्रामाणिक सिद्ध नहीं होते, एक प्रकार से भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात ही था। हालांकि भारतीय जनमानस के आंदोलित होने पर उस समय की भारत सरकार को अपनी गलती का एहसास हुआ था और उसने अपने शपथ पत्र (हलफनामे) को न्यायालय से वापस मांग लिया था।

विभिन्न देशों में वहां की स्थानीय भाषाओं में पाए जाने वाले ग्रंथों एवं विदेशों तक में किए

गए कई शोध पत्रों के माध्यम से भी यह सिद्ध होता है कि प्रभु श्री राम 14 वर्ष तक वनवासी बनकर ही वनों में निवास किए थे। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि प्रभु श्री राम भी अपने वनवास के दौरान वनवासियों के बीच रहते हुए उनसे वह समुदाय के सदस्य की तरह ही थे। साथ ही, वनों में निवासरत समुदायों ने सहज ही उन्हें अपने से जुड़ा माना और प्रभु श्री राम उनके लिए देव तुल्य होकर उनमें एक तरह से रच बस गए थे। कई वनवासी एवं जनजाति समाजों ने तो अपनी रामायण ही रच डाली है। जिस प्रकार, गोंडी रामायण, जो रामायण को अपने दृष्टिकोण से देखती है, हजारों सालों से गोंडी व पंडवानी वनों में रहने वाले जनजाति समाजों की संस्कृति धरोहर का हिस्सा रही है। गुजरात के आदिवासियों में 'डांगी रामायण' तथा वहां के भीलों में 'भलोडी रामायण' का प्रचलन है। साथ ही, हृदयस्पर्शी लोक गीतों पर आधारित लोक रामायण भी गुजरात में राम कथा की पावन परम्परा को दर्शाती है।

इसके साथ ही, विदेशों में भी वहां की भाषाओं में लिखी गई रामायण बहुत प्रसिद्ध है। आज प्रभु श्री राम की कथा भारतीय सीमाओं को लांघकर विश्व पटल पर पहुंच गई है और निरंतर वहां अपनी उपयोगिता, महत्ता और गरिमा प्रकट करती आ रही है। आज यह कथा विश्व की विभिन्न भाषाओं में स्थान, विचार, काल, परिस्थिति आदि में अंतर होने के बावजूद भी अनेक रूपों में, विधाओं में और प्रकारों में लिखी हुई मिलती है। यथा, थाईलैंड में प्रचलित रामायण का नाम 'रामकिचेन' है। जिसका अर्थ है राम की कीर्ति। कम्बोडिया की रामायण 'रीमकेर' नाम से प्रसिद्ध है। लाओस में 'फालक फालाम' और 'फोमचक्र' नाम से दो रामायण प्रचलित हैं। मलेशिया यद्यपि मुस्लिम राष्ट्र है, परंतु वहां भी 'हिकायत सिरीराम' नामक रामायण प्रचलित है, जिसका तात्पर्य है श्री राम की कथा। इंडोनेशिया की रामायण का नाम 'काकविन रामायण' है, जिसके रचनाकार महाकवि काकविन हैं। नेपाल में 'भानुभक्त रामायण' और फिलीपींस में 'महारादिया लावन' नामक रामायण प्रचलित है। इतना ही नहीं, प्रभु श्री राम को मिस्र (संयुक्त अरब गणराज्य) जैसे

मुस्लिम राष्ट्र और रूस जैसे कम्युनिस्ट राष्ट्र में भी लोकनायक के रूप में स्वीकार किया गया है। इन सभी रामायण में भी प्रभु श्री राम के वनवास में बिताए गए 14 वर्षों के वनवास का विस्तार से वर्णन किया गया है।

भारतीय साहित्य की विशिष्टताओं और गहनता से प्रभावित होकर तथा भारतीय धर्म की व्यापकता एवं व्यावहारिकता से प्रेरित होकर समय समय पर चीन, जापान आदि एशिया के विविध देशों से ही नहीं, यूरोप में पुर्तगाल, स्पेन, इटली, फ्रान्स, ब्रिटेन आदि देशों से भी अनेक यात्री, धर्म प्रचारक, व्यापारी, साहित्यकार आदि यहां आते रहे हैं। इन लोगों ने भारत की विभिन्न विशिष्टताओं और विशेषताओं के उल्लेख के साथ साथ भारत की बहुप्रचलित श्री राम कथा के संबंध में भी बहुत कुछ लिखा है। यही नहीं, विदेशों से आए कई विद्वानों, जहां इस संदर्भ में स्वतंत्र रूप से मौलिक ग्रंथ लिखे हैं, वहीं कई ने इस कथा से सम्बंधित 'रामचरितमानस' आदि विभिन्न ग्रंथों के अनुवाद भी अपनी भाषाओं में किए हैं और कई ने तो इस विषय में शोध ग्रंथ भी तैयार किए हैं।

भारत के वनवासियों के तो रोम-रोम में प्रभु श्री राम बसे हैं। उन्हें प्रभु श्रीराम से अलग ही नहीं किया जा सकता है। प्रभु श्री राम की जड़ें आदिवासियों में बहुत गहरे तक जुड़ी हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि विदेशी मिशनरियों के कुत्सित प्रयासों को विफल करते हुए भारतीय संस्कृति पर हमें गर्व करना होगा। धर्मप्राण भारत पूरे विश्व में एक अद्भुत दिव्य देश है। क्योंकि भारत में ही प्रभु श्रीराम एवं श्रीकृष्ण ने जन्म लिया। हमारे भारतवर्ष में भगवान स्वयं आए हैं एवं एक बार नहीं अनेक बार आए हैं। हमारे यहां गंगा जैसी पावन नदी है एवं हिमालय जैसा दिव्य पर्वत है। ऐसे भाग्यशाली कहां हैं अन्य देशों के लोग।

विदेशों में रामायण के प्रचलित नाम

- थाईलैंड में प्रचलित रामायण का नाम 'रामकिचेन' है।
- कम्बोडिया की रामायण 'रीमकेर' नाम से प्रसिद्ध है।
- लाओस में 'फालक फालाम' और 'फोमचक्र' रामायण।
- मलेशिया में 'हिकायत सिरीरामा' नामक रामायण है।
- इंडोनेशिया की रामायण का नाम 'काकविन रामायण' है।
- नेपाल में 'भानुभक्त रामायण'।
- फिलीपींस में 'महारादिया लावन' रामायण है।

प्राचीन भारत में शून्य और अनंत की अवधारणाएं

प्रोफेसर बलवंत सिंह राजपूत
(पूर्व) कुलपति तथा अध्यक्ष,
उत्तर प्रदेश राज्य उच्च शिक्षा परिषद।

यह मानने के अनेक अकाट्य प्रमाण हैं कि विज्ञान का विकास प्रत्यक्ष प्रकृति की विविधता एवं जटिलता में छिपी सममिति के संदर्भ में प्राचीन भारतीय ऋषियों की जिज्ञासा के साथ प्रारंभ हो गया था। प्रकृति को घटकों एवं प्रक्रमों को मौलिक आधार पर समझने के ये प्रयास उन्हें प्रत्यक्ष परीक्षणों के क्षेत्र से बहुत आगे ले गए थे तथा तार्किक विश्लेषण के आधार पर वे परमाणु (पदार्थ संरचना का मुख्य घटक) तथा गणित में शून्य, अनंत, स्वतंत्र नौ अंकों, ज्यामिति, त्रिकोणमिति, सममिति, बीजगणित, गति के नियमों, गुरुत्वाकर्षण तथा ग्रहगति, एवं अति सूक्ष्म वस्तुओं के मापन में अनिश्चितता को समझने में पूर्ण रूप से सफल हुए थे। उन्होंने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, तथा विभिन्न दर्शनों को वेदांग एवं उपांग में सम्मिलित किया, जिनके आधार पर वैदिक ज्ञान को आत्मसात किया गया था। वेद ज्ञान के अक्षय श्रोत हैं तथा वेद वाक्य स्वयं में ही प्रमाण होता है। पुरुषसूक्त के द्वारा वेद ऋचाओं में निहित विज्ञान के सिद्धांतों को समझा जा सकता है।

प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में अनेक वैज्ञानिक जिज्ञासा एवं उनके समाधान उल्लेखित हैं। इसी प्रकार अथर्ववेद चिकित्सा विज्ञान के अद्भुत ज्ञान का श्रोत है। जिसके कारण आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद माना जाता है। यजुर्वेद में भी विज्ञान एवं गणित के विभिन्न क्षेत्रों में अद्भुत शोध के संकेत मिलते हैं। चारों उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, स्थापत्यवेद तथा गन्धर्व वेद) विज्ञान की विभिन्न शाखाएं ही हैं। सभी वैदिक दर्शन (सांख्य, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा, योग एवं वेदांत) प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक शोध के भंडार हैं।

विज्ञान का विकास प्रत्यक्ष प्रकृति की विविधता एवं जटिलता में छिपी सममिति के संदर्भ में प्राचीन भारतीय ऋषियों की जिज्ञासा के साथ प्रारंभ हो गया था। इसके अनेक अकाट्य प्रमाण वेदों, उपनिषदों और सनातन शास्त्रों में भरे पड़े हैं। इसलिए जरूरी है कि देश के युवाओं को प्राचीन भारतीय गणित एवं विज्ञान के विषय में भी अवगत कराया जाए ताकि उनमें मौलिक चिंतन की प्रवृति विकसित हो।

प्राचीन भारतीय दार्शनिकों तथा मनीषियों ने जागृति की प्रारंभिक अवस्था में ही ब्रह्मांड की सममिति के रहस्य को समझ लिया था और यह जान लिया था कि इसका सुदृढ़ गणितीय आधार है तथा इसके किसी भी मौलिक प्रकरण का विस्तृत विश्लेषण करने के लिए गणितीय शुद्धि की एक निश्चित सीमा तक आवश्यकता है, जिसके लिए कुछ गणितीय नियमों को जानना आवश्यक है। इन तथ्यों के प्रकाश में वेदांग ज्योतिष (1200 ई.पूर्व) में गणित को सभी प्रकार के विज्ञान के शीर्ष पर रखा गया था-

यथा शिखा मयूराणां, नागानां मणयो यथा।
तद् वेदांगशास्त्राणां, गणितं मूर्ध्नि वर्तते।।

अर्थात्- 'जैसी मयूर पंख पर चंदोवे की शोभा है तथा नाग के सिर पर नागमणि की शोभा है वैसे ही सभी वेदांग शास्त्रों में गणित की शोभा है जो सभी प्रकार के विज्ञानों के शीर्ष पर है।'

गणित में शून्य, अनंत, स्वतंत्र नौ अंको एवं दशमलव स्थान मान पद्धति की खोज प्राचीन भारत में ही हुई थी। भारत में शून्य की खोज वैदिक युग में ही कर ली गई थी जैसा कि यजुर्वेद (40.17) में उल्लेखित है- ॐ खं ब्रह्म जिसका अर्थ है कि ॐ तथा खं दोनों परमात्मा को अंकित करते हैं। वेदांग ज्योतिष में खम को शून्य के रूप में परिभाषित किया है। जिसके बिना परमात्मा (अनंत) को नहीं जाना जा सकता है (परमात्मा को जानने के लिए चेतना में शून्य उत्पन्न करना अनिवार्य होता है)।

अनंत का उल्लेख उपनिषद में निम्न प्रकार से किया गया है-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

इसका अर्थ है कि अनंत, अनंत से ही उत्पन्न होता है तथा इसमें कुछ भी जोड़ने पर या कुछ भी घटाने पर ये अनंत ही रहता है। इस ऋचा का भाव है कि पूर्ण से पूर्ण उत्पन्न होता है, पूर्ण से ही पूर्ण सिंचित होता है। हम उस अनंत को जानने का सद्प्रयत्न करें जिस पूर्ण से सब अभिसिंचित होता है। चालुक्य साम्राज्य के नरेश सोमेश्वर (तृतीय) द्वारा रचित मनसोल्लास में भारतीय संख्या तंत्र का विशद वर्णन मिलता है। जिसके अनुसार संख्याओं के अठारह स्थान मान होते हैं। शून्य को 1 के पश्चात रखने पर संख्या का मन दस हो जाता है, 1 के पश्चात दो शून्य रखने पर संख्या शत तथा तीन शून्य रखने पर सहस्त्र हो जाती है। उसी क्रम में 1 के पश्चात अठारह शून्य रखकर दीर्घ संख्याओं (प्रारथा) की रचना का वर्णन इस ग्रंथ में है। इसी क्रम में वाल्मीकि रामायण के अष्टावीन सर्ग 33, 37, 39 में 1 के बाद 62 शून्य रखकर अति दीर्घ संख्या (शत महौध) का उल्लेख है। आधुनिक विज्ञान में अभी तक किसी भी ज्ञात प्रक्रम अथवा संरचना को विश्लेषित करने हेतु इतनी दीर्घ संख्या की परिकल्पना भी नहीं की गई है। आधुनिक विज्ञान में महत्तम परिकल्पित संख्या अवोगाद्रो संख्या (1 के बाद 23 शून्य) है। आधुनिक गतिक उत्सर्जित कॉस्मोलॉजी में कल्पित स्ट्रॉन्ग ग्रेविटी में महत्तम संख्या 1 के बाद 48 शून्य है, जो ब्रह्मांड तथा एटम की त्रिजियाओं के अनुपात का वर्ग है। अभी तक

प्राचीन भारतीय शास्त्रों में दस गुणोत्तरी संख्या यथा लक्षांश, सहस्त्रांश, शतांश आदि शब्दावली भी प्रयोग में लाई गई है जिससे दशमलव की परिकल्पना वैदिक युग से ही परिलक्षित होती है। दस गुणोत्तरी संख्या प्रणाली भारतीय ऋषियों की जगत को अद्भुत देन है।

प्रकृति के आधुनिक विज्ञान में प्रेक्षित किसी भी प्रक्रम अथवा संरचना में स्ट्रॉन्ग ग्रेविटी का कोई प्रमाण नहीं है। इसका अर्थ है प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों को प्रकृति के ऐसे रहस्यों का ज्ञान था जिन्हें विश्लेषित करने के लिए इतनी दीर्घ संख्या शत महौध (1 के बाद 62 शून्य) की आवश्यकता थी।

प्राचीन भारतीय शास्त्रों में दस गुणोत्तरी संख्या यथा लक्षांश, सहस्त्रांश, शतांश आदि शब्दावली भी प्रयोग में लाई गई है जिससे दशमलव की परिकल्पना वैदिक युग से ही परिलक्षित होती है। दस गुणोत्तरी संख्या प्रणाली भारतीय ऋषियों की जगत को अद्भुत देन है। भारत ने विश्व को शून्य, अनंत, स्वतंत्र नौ संख्याएं, अति दीर्घ संख्याएं तथा अति लघु संख्याएं ही नहीं दी बल्कि उन्हें नाम भी दिए जो दश हजार वर्ष बाद यूरोपियन देशों में जाकर प्रसिद्ध हुए। जैसा प्रोफेसर गिंसबर्ग ने स्वीकार किया, 'साल 770 (संभावित) में उज्जैन के निवासी कनक नाम के विद्वान ने खलीफा अब्बास सय्यद अलमनसूर के निमंत्रण पर बगदाद जाकर हिंदू संख्याओं का ज्ञान दिया जो मिश्र होकर पश्चिम देशों में अरेबिक संख्याओं के रूप में पहुंचा और जहां उसे इल्मे हिन्दसा के नाम से जाना गया।'

भारतीय बुद्धिमत्ता की प्रसंशा करते हुए प्रसिद्ध वैज्ञानिक लाप्लास ने लिखा है, 'विश्व के समस्त गणितज्ञ तथा वैज्ञानिक हिंदुओं के बहुत आभारी हैं जिन्होंने शून्य, अनंत तथा दशमलव स्थान मान की अद्भुत खोज की जिसकी कल्पना आर्किमिडीज एवं अपोलोनियस भी नहीं कर पाए थे।' आज आवश्यकता है कि हमारे देश के छात्रों को प्राचीन भारतीय गणित एवं विज्ञान के विषय में भी अवगत कराया जाए ताकि उनमें मौलिक चिंतन की प्रवृति विकसित हो। ■

अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद जम्मू-कश्मीर

डॉ. रीतिका शुक्ला
सहायक प्रोफेसर
शारदा विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

जम्मू-कश्मीर पिछले चार वर्ष से शांति और विकास पथ पर अग्रसर है। आज जम्मू-कश्मीर में भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद अपनी अंतिम सांसे गिन रहा है। कहीं केसर की महक तो कहीं सैलानियों का उत्साह तो कहीं मंदिरों का जीर्णोद्धार बिना शब्द के सब कुछ कह रहा है।

05 अगस्त 2019 से पहले जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 के कारण कई वर्षों तक भ्रष्टाचार और आतंकवाद की समस्या का कोई समाधान नहीं निकल पाया था। घाटी में लोगों के जीवन पर हमेशा आतंक का खौफ बना रहता था। अलगाववादी ताकतों के दबाव में काम करने वाली पहले की राज्य सरकारें और राजनीतिक संगठन कुछ विशेष वर्गों के निजी स्वार्थ और फायदे के लिए काम करते थे। अनुच्छेद 370 को ये अपने गलत कार्यों के लिए ढाल के रूप में प्रयोग करते थे और इसका सबसे अधिक नुकसान जम्मू-कश्मीर के नागरिकों को ही हो रहा था।

भाजपा शासित केंद्र सरकार ने इस अनुच्छेद को निरस्त कर दिया और यहां के 350 से अधिक कानूनों को जनहित में संशोधित किया। जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रपति शासन के दौरान केंद्र सरकार द्वारा शांति और लोकतंत्र की बहाली के लिए यहां के कानूनों को फिर से लिखने और दोबारा बनाने के जरूरी काम को पूरा कर, देश के संविधान के साथ जम्मू-कश्मीर के एकीकरण को सुनिश्चित किया गया। आज यह देखना सुखद है कि इन प्रशासनिक बदलावों ने जम्मू-कश्मीर में कानून के शासन को फिर से बहाल कर दिया है। जम्मू-कश्मीर में इस समय जो शांति बहाल हुई है वह पहले की सरकारों की तरह खरीदी नहीं गई है बल्कि कानून और सुशासन के द्वारा लाई गई है। राष्ट्रपति शासन के दौरान किए गए महत्त्वपूर्ण प्रयासों का सबसे बड़ा परिणाम यह हुआ है कि देश-विरोधी अलगाववादी ताकतों द्वारा जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 की स्थिति अब कभी भी वापस नहीं लाई जा सकती है।

घाटी की बदली हुई परिस्थितियों में यहां के अल्पसंख्यक शिया, सूफी और कश्मीरी हिन्दू पहली बार पूर्ण स्वतंत्रता का अनुभव कर रहे हैं और अपने नागरिक अधिकारों का उपयोग कर पा रहे हैं। घाटी में लगभग 20 से 25 प्रतिशत आबादी शिया मुस्लिमों की है। लेकिन 1988 के बाद से शिया समुदाय के लोग श्रीनगर में मुहर्रम का धार्मिक जुलूस नहीं निकाल पा रहे थे। लगभग तीन दशकों के बाद 20,000 से अधिक शिया मुस्लिम 19 जुलाई 2023 को श्रीनगर के लाल चौक से अपना जुलूस निकाल पाए। यह जम्मू-कश्मीर प्रशासन की एक बड़ी सफलता है जिसने घाटी के लोगों में आतंक के विरुद्ध एक नया विश्वास पैदा किया है। कुपवाड़ा जिले में सीमावर्ती टीटवाल गांव से सीमा के उस पार शारदा मां की एक पवित्र शक्ति पीठ है, जिस पर कई वर्षों से ध्यान नहीं दिया गया था। अब जम्मू- कश्मीर प्रशासन द्वारा मां शारदा के इस पवित्र मंदिर का पुनर्विकास किया जा रहा और अब इस शक्ति पीठ के लिए करतारपुर कॉरिडोर जैसी व्यवस्था करने पर विचार हो रहा है।

कश्मीर घाटी कभी शैव और सूफी मंदिरों के लिए प्रसिद्ध थी पर अलगाववादी

ताकतों के दबाव में पहले की सरकारों ने यहां के ऐतिहासिक हिन्दू मंदिरों के जीर्णोद्धार पर कोई ध्यान नहीं दिया। परंतु आज जम्मू-कश्मीर के मौजूदा प्रशासन द्वारा श्रीनगर में झेलम नदी के तट पर महाराजा गुलाब सिंह द्वारा 1835 में बनाए गए श्री रघुनाथ मंदिर और 700 साल पुराने मंगलेश्वर भैरव मंदिर जैसे धार्मिक स्थलों के पुनर्विकास और जीर्णोद्धार का काम किया जा रहा है।

केंद्र सरकार और स्थानीय प्रशासन द्वारा किए गए प्रयासों से जम्मू-कश्मीर में पिछले 04 वर्षों में देशी और विदेशी दोनों तरह के पर्यटकों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि देखने को मिली है। पिछले साल जम्मू-कश्मीर में 8 लाख से अधिक पर्यटक आये थे और इस साल यह संख्या 20 लाख को पार कर सकती है। जम्मू-कश्मीर में पर्यटकों की यह संख्या देश के कई राज्यों के पर्यटकों के बराबर है। पर्यटन में आई इस तेजी से स्थानीय लोगों की आजीविका में काफी वृद्धि हुई है और उनके जीवन-स्तर में सुधार हुआ है। श्रीनगर में साल 2023 में एक अंतरराष्ट्रीय आयोजन भी हुआ। मई 2023 महीने में यहां जी-20 वर्किंग ग्रुप की बैठक आयोजित हुई। इसमें 50 से अधिक अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके कुछ दिनों बाद ही घाटी में पहली बार देश के कई उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय के 200 से अधिक न्यायाधीशों की एक बैठक हुई। इस तरह की बैठक कश्मीर घाटी में एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक बदलाव का प्रतीक है।

पिछले चार वर्षों में जम्मू-कश्मीर में पूंजी-निवेश में भी लगातार वृद्धि हुई है। यहां 25,000 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं पर काम चल रहा है और आगे 80,000 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाएं और आनी हैं। पिछले वर्षों में, सरकारी रोजगार के मामले में भी जम्मू-कश्मीर प्रशासन देश के अन्य राज्यों

आजादी का अमृत महोत्सव' की रैंकिंग में जम्मू-कश्मीर शीर्ष प्रदर्शन करने वाले केंद्र शासित प्रदेशों या राज्यों में शीर्ष पर है। आज जम्मू-कश्मीर में केन्द्र सरकार द्वारा किए गए प्रशासनिक सुधार और सुशासन स्थापित करने के प्रयास यहां की नई पहचान हैं।

की तुलना में काफी आगे है। पिछले चार वर्षों में यहां के युवाओं को 30,000 से अधिक नौकरियां दी गई हैं। 'गांव की ओर' कार्यक्रम से घाटी के युवाओं के लिए जमीनी स्तर पर रोजगार और आजीविका के नए रास्ते खुल रहे हैं। इस कार्यक्रम के तहत इस साल लगभग 50,000 युवाओं और महिला स्वयं सहायता समूहों को ऋण सहायता दी गई है। पिछले चार वर्षों में जम्मू-कश्मीर में बड़े बदलाव हुए हैं। एक अलग संविधान की जगह यहां देश का संविधान लागू हुआ है। एक बड़े राज्य की जगह यहां अलग-अलग संघ-शासित क्षेत्र बन गए हैं।

इन बदलावों से यहां के लोगों को पहले की तुलना में आर्थिक उन्नति के अधिक अवसर मिल रहे हैं, और सरकारी योजनाओं का अधिक लाभ मिल पा रहा है। कोविड 19 महामारी के दौरान भी यहां के नए प्रशासन ने घाटी की कठिन परिस्थितियों को बहुत अच्छी तरह से संभाला था और मुंबई हाई कोर्ट ने जम्मू-कश्मीर के कोविड मैनेजमेंट की सराहना करते हुए महाराष्ट्र सरकार को इससे सीख लेने की सलाह दी थी।

'आजादी का अमृत महोत्सव' की रैंकिंग में जम्मू-कश्मीर शीर्ष प्रदर्शन करने वाले केंद्र शासित प्रदेश/राज्यों में शीर्ष पर है। आज जम्मू-कश्मीर में केन्द्र सरकार द्वारा किए गए प्रशासनिक सुधार और सुशासन स्थापित करने के प्रयास यहां की नई पहचान हैं।

प्रशासन का बड़े स्तर पर डिजिटलीकरण करके इसे व्यवस्थित बनाया गया है। पिछले चार वर्षों में सरकार के चौतरफा प्रयासों से जम्मू-कश्मीर आतंक, भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अराजकता से लगभग मुक्त हो गया है। आज घाटी में आतंक की जड़ें सूख चुकी हैं। अनुच्छेद 370 को हटाने का उद्देश्य जम्मू-कश्मीर को देश के अन्य राज्यों की तरह विकास के समान अवसर उपलब्ध कराते हुए नागरिकों को पूर्ण लोकतांत्रिक अधिकार देकर देश के साथ इसका पूर्ण रूप से एकीकरण करना था। पिछले चार वर्षों के दौरान जम्मू-कश्मीर में हुई आर्थिक उन्नति और अभूतपूर्व शांति बहाली केन्द्र सरकार और स्थानीय प्रशासन की सफलता का प्रमाण है। ■

धर्म और विज्ञान पर विवेकानंद का चिंतन

डॉ. प्रीता पंवार
तकनीकी-प्रबंध सलाहकार

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय शास्त्रों के विज्ञानमय विचारों से दुनिया को परिचित कराया। उन्होंने विश्व की समस्त सभ्यताओं को बताया कि सनातन धर्म के सिद्धांतों से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की बाह्य एवं आंतरिक उन्नति बिना एक दूसरे का अतिक्रमण किये भी संभव है।

प्रकृति, धर्म और विज्ञान परस्पर कैसे एक दूसरे के पूरक हैं, इस पर स्वामी विवेकानंद का शिकागो में दिया ऐतिहासिक भाषण अंग्रेजों के लिए आईने की तरह था। क्योंकि 1857 की क्रांति के बाद अंग्रेजों की फूट डालो, राज करो एवं भारतीय धर्म, शास्त्र और विचारों पर नीति विभाजनकारी और वर्चस्व की थी। इसी नीति के अंत के लिए भारत में विवेकानंद का उद्घोष परिवर्तनकारी सिद्ध हुआ। जिससे कालांतर में राष्ट्रीय आंदोलनों का न केवल जन्म हुआ बल्कि स्व आत्मबोध की अवधारणा ने गहरे पैठ की। इस तरह राष्ट्रवाद को एक नया रंग और जोश दिया एक युवा संन्यासी क्रांतिकारी ने। वो ओजस्वी युवा थे नरेन्द्र, जो बाद में स्वामी विवेकानन्द के नाम से विख्यात हुए। स्वामी विवेकानंद अपने परिधानों से संन्यासी अवश्य थे किंतु अपने विचारों, दर्शन और कर्म से वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले एक अनन्य राष्ट्रवादी। वो न धर्मग्रंथों को वरीयता देते थे, न कर्मकांडों को, वो वरीयता देते थे अपने उस राष्ट्र को, जिसका एक-एक नागरिक स्वाभिमान के साथ स्वतंत्र परिवेश में स्वांस ले सके। जहां भूख, गरीबी और दुर्बलता का नामोनिशान न हो और जो अपनी मूलभूत आध्यात्मिक विरासत की रक्षा के साथ-साथ विज्ञान के क्षेत्र में भी आगे हो।

स्वामी विवेकानंद ने वेदांत की गहन शिक्षाएं ग्रहण कीं। साथ ही उन्होंने पाश्चात्य दर्शन का भी गूढ़ अध्ययन किया। अपने राष्ट्र के समुचित विकास के लिए उन्होंने पूर्व व पश्चिम की संस्कृतियों के समन्वय के नीर क्षीर विवेक पर जोर दिया। वे राष्ट्र के विकास को ही अपना धर्म मानते थे और कहते थे कि वे हजार बार नर्क जा सकते हैं यदि इससे राष्ट्र का भला हो। नौजवानों की शक्ति पर उन्हें अटूट विश्वास था, यही कारण था कि वो नौजवानों को बंद कमरे में गीता पढ़ने की बजाय खेल के खुले मैदानों में फुटबॉल खेलने का संदेश देते थे। वो प्रत्यक्ष और वास्तविक जगत की बात करते थे। किसी परोक्ष, अदृश्य शक्ति की बात नहीं करते थे। वो विज्ञान और आध्यात्मिक जीवन में समन्वय को सर्वोपरि महत्व देते थे। विज्ञान को वो ऐसा सोपान मानते थे जिसके माध्यम से राष्ट्र आर्थिक संपन्नता व सुरक्षा के ऊंचे आयामों को प्राप्त कर सकता है।

निश्चित रूप से स्वामी विवेकानंद मात्र एक संन्यासी नहीं थे। वे एक क्रांतिकारी थे। उन्होंने स्वाभिमानी, ओजस्वी, बलिदानी महागाथा लिखने वाले आमजन की अगुवाई की। वो अपने दौर के अनगिनत युवाओं के प्रेरणा स्रोत बने। देशभक्तों के सरताज सुभाष चंद्र बोस भी स्वामी विवेकानंद को अपना आराध्य मानते थे। यह स्वामी विवेकानंद का ही प्रभाव था कि न केवल बंगाल बल्कि पूरे देश के युवा उद्वेलित हुए। प्रेम उनके लिए क्रांति और उत्सर्ग बन रहा था। उनके विचार बंगाल में पड़े अकाल, भूख और पूरे देश की आहत आत्मा एवं उन युवाओं को गुलामी की अनगिनत बेड़ियों से खींच कर जीवन न्योछावर करने के लिए प्रेरित करने लगे। निस्संदेह स्वामी विवेकानंद का जाज्वल्य हृदय क्रांति के लिए ही बना था। किंतु उनकी पीढ़ी के हजारों देशभक्त युवाओं और विवेकानंद में एक अंतर था - वे अत्यधिक विचारशील और अध्ययनशील थे। उनके पास न केवल तर्कशक्ति थी अपितु कार्य कारण विवेचना और तथ्यों का विश्लेषण करने की अपूर्व सामर्थ्य भी। इस तरह उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक था। उन्होंने दुनियाभर के समाज के बारे में पढ़ा। उन्होंने भारत के स्वर्णिम अतीत को खंगाला और तब जाकर वो इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि दरिद्र नारायण की मुक्ति के बगैर देश का विकास संभव नहीं। अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस से दीक्षा लेकर वे विश्व धर्म संसद मे भाषण देने पहुंचे और अपनी ओजमयी वाणी से उन्होंने भारत की प्राचीन, ज्ञान, विज्ञान की संपदा से विश्व का परिचय करवाया। भारतीय इतिहास में 11 सितंबर 1893 की वो तिथि स्वर्णाक्षरों में सदैव के लिए अंकित हो गई। स्वामी विवेकानंद का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने औपनिवेशिक शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष को आध्यात्मिक आधार और आयाम दिया। इसके साथ ही उन्होंने देश के नैतिक व सामाजिक उत्थान के लिए अनवरत कार्य किया। उनके लिए हिन्दू शब्द का अर्थ भारत, राष्ट्र था। तभी उन्होंने हुंकार भरी, गर्व से कहो कि मैं हिन्दू हूं। किन्तु वह हिन्दू और संन्यासी के रूप में जितना धार्मिक थे, उससे कहीं अधिक मानव मुक्ति के प्रेमी थे। उनका समस्त प्रयास आज़ाद भारत, जाति मुक्त और समरस जीवन समन्वय से सुदृढ़ भारत के लिए था। यही उनका परम लक्ष्य था। यही उनके संन्यासी होने का कारण था। और यही उनके धर्म परिधान का लक्ष्य भी। ■

गौ विज्ञान अनुसंधान केंद्र गाय की उपयोगिता सिद्ध करेगा - मोहन भागवत

गाय के संवर्धन का यह प्रकल्प देश को विश्व पटल पर अग्रणी बनाएगा। प्रकल्प की प्रेरणा हमें प्राचीन काल से मिलती है। जिससे भारत हमेशा भारत रहता है। जो हमारा पालन करती है, वह हमारी माता है। चाहे वह गाय के रूप में हो, नदी के रूप में हो, धरती के रूप में हो। यह बात गौ विज्ञान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र के लोकार्पण पर मथुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कही। उन्होंने दीनदयाल गऊ ग्राम परखम में दीनदयाल गौ विज्ञान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र, मथुरा में लोकार्पण किया। साथ ही दीनदयाल बुनकर केंद्र एवं बायोगैस प्लांट का भी लोकार्पण व आयुष पशु चिकित्सा संस्थान का शिलान्यास किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि दीनदयाल जी ने एक अंत्योदय मंत्र दिया था, जिसका अर्थ है कि समाज के अन्तिम लाइन में खड़े व्यक्ति की उन्नति वास्तविक उन्नति है। वही देश की उन्नति में अग्रसर होता है। हम इन सभी के कृतज्ञ हैं। इनसे प्रेरणा लेकर इनके लिए कुछ करना ही मानव जीवन है। यह सब हमें परम्पराओं ने सिखाया है। यह हमारी आत्मा है जो सभी को स्वच्छ रखती है। निरंतर गौ सेवा से हमने इसे प्रत्यक्ष पाया है।

सरसंघचालक ने कहा कि देशी गाय के दूध की महिमा पूरा विश्व समझता है। बड़ी संख्या में गौ संवर्धन और गौशाला का निर्माण हो रहा है, लेकिन हम अपनी श्रद्धा को भूल गए हैं। भारत का उत्थान कब होता है, जब धर्म का स्थान होता है। पूरे विश्व को उसकी भाषा में समझाने के लिए आयुर्विज्ञान केन्द्र, पंचगव्य संस्थान यह महत्वाकांक्षी योजनाएं हैं जो विश्व को भारत ने दी हैं। यह एक संकल्प है, जिसके लिए हमें सतत प्रयास करते रहना है। यह भारत की भूमि को गौरवान्वित करने का उपकरण है। हम सभी को भी गौ सेवा में हाथ बंटाना है। गौ को माता कहना है तो उनके पुत्र का कर्तव्य भी हमें निभाना है। कर्तव्य के लिए सेवा करेंगे, उसे अपने पास रखेंगें तभी गौ सेवा का संकल्प पूर्ण होगा। यहां गौ सेवा के लिए आश्रय स्थल भवन बनने जा रहा है, जिससे गाय की सेवा में कोई कमी नहीं रहेगी। सरसंघचालक ने कहा कि मैं जब भी दीनदयाल धाम आता हूं, मुझे आनन्द की अनुभूति होती है। इस परिसर का प्रकल्प हर बार पांच कदम आगे रहता है। सन् 1983 में प्रथम बार मैं नगला चन्द्रभान आया था। जब दीनदयाल जी के छोटे से घर का भूमि पूजन था।

मेरे साथ नाना जी देशमुख, भाऊराव देवरस, अटल जी थे। बारिश आ जाने के बावजूद भूमि पूजन का कार्य भीगते हुए सम्पन्न किया गया। सन् 2009 में सरकार्यवाह रहते हुए दूसरी बार यहां आया, तब प्रकल्पों का थोड़ा कार्य शुरू हो चुका था। कार्यक्रम में समिति के मंत्री हरीशंकर ने कहा कि दीनदयाल धाम की स्थापना सन् 1988 में भाऊराव देवरस ने की थी। ओमप्रकाश की प्रेरणा से यहां गौशाला का निर्माण हुआ। इस अनुसंधान केन्द्र का 07 मई 2023 को शंकरलाल ने भूमि पूजन कर शुभारम्भ किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गौ संवर्धन गतिविधि के अ.भा. प्रमुख शंकर लाल ने कहा कि यह केन्द्र भारत ही नहीं, अपितु पूरे विश्व के लिए गौ माता की सेवा का अनूठा प्रकल्प बनेगा। देशी गायों का पालन करने से भारत स्वावलम्बी, और रोग मुक्त भारत बनेगा। गौ माता के घी से बुद्धि तीक्ष्ण होती है। गाय के दूध से कुपोषण समाप्त होता है। आने वाले समय में नशा मुक्त भारत बनाने में गाय की अहम भूमिका रहेगी।

कार्यक्रम में साध्वी ऋतंभरा ने कहा कि गौ माता वात्सल्य जननी है। गौ महिमा साधारण व्यक्ति के बिना व्यक्त नहीं की जा सकती। गौ माता कचरे से भूख मिटाती है तो दिल को दर्द होता है। धरती को माता कहते हैं, लेकिन रासायनिक खाद से गोद को छलनी किया जा रहा है। लेकिन इस अनुसंधान केन्द्र के निर्माण से इन सब चीजों पर कुछ हद तक अंकुश लगेगा। सारे विश्व का कल्याण इस अनुसंधान केन्द्र से होगा। साथ ही कार्यक्रम में गाय पर बनने वाली फिल्म गोदान का पोस्टर एवं अनुसंधान केंद्र में संचालित होने वाले पाठ्यक्रम पुस्तकों का विमोचन भी हुआ। ■

चीन ने बदली चाल

बिक्रम उपाध्याय
वरिष्ठ पत्रकार

5 अगस्त, 2019 को भारत की संसद ने जम्मू-कश्मीर में लागू विभेदकारी व्यवहार वाले अनुच्छेद 370 को समाप्त कर दिया। कुछ लोगों ने मोदी सरकार के इस ऐतिहासिक फैसले को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी, जिस पर अब सुप्रीम कोर्ट ने भी संवैधानिक मुहर लगा दी है कि अनुच्छेद 370 अस्थाई व्यवस्था थी, जिसे समाप्त करने का पूरा अधिकार केंद्र सरकार को था। हालांकि सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय से पाकिस्तान और चीन को कोई मतलब नहीं था, फिर भी दोनों पड़ोसियों ने अनर्गल टिप्पणियां कीं। पाकिस्तान ने खीज मिटाने के लिए मुस्लिम उम्मा को खरी खोटी सुनाई कि कश्मीर में मोदी सरकार द्वारा एक तरफा कार्रवाई के बावजूद मुस्लिम देश भारत का साथ दे रहे हैं, लेकिन चीन ने फिर एक बार यह दावा किया कि लद्दाख उसका हिस्सा है और भारत के किसी न्यायालय के निर्णय से उसके दावे पर कोई असर नहीं पड़ता। चीन के इस दावे को हल्के में नहीं लिया जा सकता, क्योंकि चीन लद्दाख के बहाने हिन्द महासागर में अपनी स्थिति

वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर मात खाने के बाद चीन अपने पैंतरे बदल रहा है। वह भारत को घेरने के लिए अब लद्दाख, हिन्द महासागर समेत कई पहलुओं पर साजिश रच रहा है। ऐसे में चीन से बेहद चौकन्ना रहने की जरूरत है।

मजबूत करने और क्वाड से निपटने का मंसूबा बना चुका है।

लद्दाख के बारे में बीजिंग की सोच का नमूना मई 2020 में, चीन द्वारा लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के पार एक साथ कई घुसपैठ के रूप में देखा जा सकता है। इन घटनाओं के कारण ही दोनों पक्षों के हजारों सैनिक एक दूसरे के सामने डटे हुए हैं। क्योंकि यह पता नहीं कि चीन कब कोई एक घातक झड़प कर ले और फिर से भारत को युद्ध के करीब ले आए। हालांकि फरवरी 2021 में सैनिकों को पीछे हटाने के समझौते पर घोषणा की गई थी, लेकिन हकीकत में सैनिकों को हटाने की नीति पर कार्यान्वयन हुआ ही नहीं। इससे ही स्पष्ट होता है कि चीन के साथ भारत की रणनीतिक प्रतिस्पर्धा दीर्घकालिक होनी है और यह बड़ी चुनौती भी है।

लद्दाख की सीमा पर भारत को एक नई रणनीतिक वास्तविकता का सामना करना पड़ रहा है, जहां चीन एक स्पष्ट और स्थायी प्रतिद्वंद्वी के रूप में खड़ा है और जिसका भाव शत्रुता और अविश्वास का है। एलएसी पर चीन का भारी सैन्य जमावड़ा और खूनी हिंसा भारत देख चुका है। इस वास्तविकता को देखते हुए लद्दाख पर चीन के बयान को भारत हल्के में नहीं ले सकता। क्योंकि चीन लद्दाख में सैन्य आधुनिकीकरण और हिंद महासागर में समुद्री विस्तार में लगा हुआ है। चीनी नौसेना के निरंतर विस्तार के सामने, भारत को भी हिंद महासागर में सैन्य शक्ति बढ़ाने की जरूरत है, नहीं तो चीन के सामने अपनी स्थिति कमजोर होने का जोखिम है।

भारत के लिए चुनौती हिंद महासागर में तेजी से बढ़ती चीनी सैन्य उपस्थिति ही नहीं

है, बल्कि उत्तरी सीमा पर बढ़ते चीनी सैन्य खतरे को भी आंक कर कदम उठाने की जरूरत है। हिंद महासागर में भारत के साथ ऑस्ट्रेलिया भी मजबूती से खड़ा है। अमेरिका भी चाहता है कि भारत तेजी से सक्षम और सक्रिय बने ताकि चीन के मुकाबले खड़े होकर क्वाड के हितों की रक्षा कर सके। हिंद महासागर क्षेत्र में शक्ति प्रक्षेपण क्षमताओं के निर्माण के भारतीय सेना लगातार प्रयासरत भी है, लेकिन चीन की वैश्विक महत्वाकांक्षा बहुत खतरनाक है।

लद्दाख के साथ लगी चीन की सीमा भारत की रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के लिए परीक्षा के समान है। लद्दाख में आने वाला कोई भी संकट भारत-चीन के बीच युद्ध की स्थिति पैदा कर सकता है। कोई भी नया विवाद पीएलए की वापसी को रोक सकता है, जिसके लिए चीन फिलहाल सैद्धांतिक रूप से ही सही, तैयार हुआ है। भारत अपनी ओर से यथास्थिति की वापसी का प्रयास कर रहा है, लेकिन जब तक दोनों पक्षों की सैन्य वापसी शुरू नहीं हो जाती तब तक संकट

लद्दाख के साथ लगी चीन की सीमा भारत की रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के लिए परीक्षा के समान है। लद्दाख में आने वाला कोई भी संकट भारत-चीन के बीच युद्ध की स्थिति पैदा कर सकता है।

टला हुआ नहीं माना जा सकता। वार थिएटर से सेनाओं की वापसी की आशंका चीन से क्षेत्रीय जोखिम को बढ़ा ही रही है और भारतीय रक्षा नीति की प्राथमिकता को भी प्रभवित कर रही है। निश्चित रूप से अन्य अनिवार्यताओं के लिए संसाधनों में पुनर्संतुलन बनाने की आवश्यकता होगी।

पीएलए की लद्दाख में कोई भी नई घुसपैठ दशकों से भारत द्वारा राजनीतिक समझौतों के प्रयासों को भी धक्का लग सकता है। नई दिल्ली ने विश्वास-निर्माण के लिए हर संभव कोशिश की है। इतिहास साक्षी है कि 1962 के युद्ध के बाद, दोनों देशों के बीच संबंधों को फिर से सामान्य होने में कई दशक लग गए और आज भी अनसुलझी सीमा तमाम राजनयिक समझौतों को बेअसर बना रही है। फिर 15, जून 2020 को गलवान घाटी में घातक झड़प ने तमाम राजनयिक चपलता को नष्ट कर दिया। विदेश मंत्री एस जयशंकर खुद यह कह चुके हैं कि लद्दाख संकट ने संबंधों को गंभीर बना दिया और असाधारण तनाव में बदल दिय। चीन के हाल की प्रतिक्रिया भी राजनयिक संबंध को प्रतिकूल, परस्पर विरोधी बनाने में ही भूमिका निभाएगी। इस तरह की शब्दावली संबंधों में पड़ी दरार की मरम्मत नहीं करेगी। चीन से हमारे रिश्ते का भविष्य सीमा पर शांति और शांति से ही संभव है, व्यापार और बाकी संबंधों के आधार अवास्तविक है। भारत ने चीन पर व्यापार के भरोसे को कम कर दिया है। अब चीन को अपनी प्रतिबद्धताओं का सम्मान करना होगा। नई दिल्ली अब सत्यापित होने तक चीन के दावे पर विश्वास नहीं कर सकता। ■

प्रेरणा विमर्श 2023 'स्व' भारत का आत्मबोध

प्रेरणा विमर्श -2023 का तीन दिवसीय (15, 16 और 17 दिसम्बर) कार्यक्रम गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय ग्रेटर नोएडा में संपन्न हुआ। जिसमें नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ, प्रदर्शनी, पत्रकार व लेखक विमर्श, सोशल मीडिया विमर्श, मीडिया शिक्षक एवं छात्र विमर्श तथा नेशनल कांफ्रेंस, पत्रकार प्रतिभा खोज परीक्षा और प्रेरणा चित्र भारती फिल्मोत्सव आयाम प्रमुख थे।

पत्रकार एवं लेखक विमर्श

सत्र -1, विषय : मीडिया एवं लेखन में विमर्श

प्रथम सत्र की शुरुआत 16 दिसंबर को सुबह 10:30 बजे हुई। इस सत्र में मुख्य वक्ता प्रोफेसर कुमुद शर्मा, साहित्य अकादमी की उपाध्यक्ष, अंग्रेजी साप्ताहिक पत्रिका ऑर्गनाइजर के संपादक प्रफुल्ल केतकर और लेखक, विचारक एवं पत्रकार देवांशु झा मौजूद रहे। सत्र का समन्वयन करते हुए प्रफुल्ल केतकर ने कहा कि अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली ने भारत की गौरवशाली संस्कृति को बदनाम किया। उन्होंने कहा कि स्वधर्म, स्वदेशी, स्वभाषा और स्वराज ये सभी स्व का भान कराते हैं। वहीं प्रो. कुमुद शर्मा ने डॉ. मंडन मिश्र और शंकराचार्य के बीच हुए संवाद के जरिए प्राचीन स्वस्थ संवाद की परंपरा को समझाया। श्रोताओं के प्रश्नोत्तर के क्रम में देवांशु झा ने कहा कि सनातन संस्कृति में जितनी स्वतंत्रता स्त्रियों को थी। ऐसी संपूर्ण विश्व में कहीं नहीं थी।

सत्र -2, विषय : विमर्श निर्माण में डिजिटल मीडिया की भूमिका, एआई और फैक्ट चेक

पत्रकार व लेखक विमर्श के द्वितीय सत्र में वरिष्ठ पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी, पत्रकार एवं यू ट्यूबर अजीत भारती और हिंदुस्तान, डिजिटल मीडिया प्रमुख प्रभाष झा ने सार्थक विमर्श किया। इस सत्र में सभी विद्वान वक्ताओं द्वारा डिजिटल मीडिया पर भारत और भारतीय संस्कृति के विरुद्ध दुष्प्रचार की मंशा से गढ़े जाने वाले राष्ट्र विरोधी विमर्शों से निपटते हुए सही विमर्श के निर्माण के प्रयासों पर गंभीर और सार्थक चर्चा की गई। चर्चा में हर्षवर्धन त्रिपाठी ने समन्वयक की भूमिका का निर्वहन किया।

सत्र –3, विषय : अंतरराष्ट्रीय मीडिया में विमर्श निर्माण

16 दिसम्बर को पत्रकार व लेखक विमर्श के तीसरे सत्र में रुबिका लियाकत, वरिष्ठ पत्रकार, टीवी न्यूज़ एंकर और अंतरराष्ट्रीय मामलों के पत्रकार विपिन्द्र ने भारत के खिलाफ विदेशी मीडिया के प्रोपेगेंडा को बड़ी बारीकी से श्रोताओं को अवगत कराया। रुबिका लियाकत ने कहा कि भारत की तरक्की पश्चिमी मीडिया को हजम नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि मैं निष्पक्ष नहीं हूं बल्कि भारत मेरा पक्ष है। इसी क्रम में रुबिका लियाकत ने कहा कि हमारा देश स्वर्ग है क्योंकि यहां चार ऋतुएं हैं, पहाड़ है, रेगिस्तान है, विविधता है इसलिए हमने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया। उन्होंने कहा कि हमें हिंदी भाषा में अपना विमर्श विश्व में पहुंचना चाहिए।

सत्र – 4, विषय : स्व भारत का आत्मबोध

पत्रकार व लेखक विमर्श के चौथे सत्र का आयोजन 17 दिसंबर 2023 को था। इस सत्र में ओम प्रकाश पांडेय, अंतरिक्ष विज्ञानी, प्रो. (डॉ.) बलदेव भाई शर्मा, कुलपति कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, रायपुर और वरिष्ठ पत्रकार रवि शंकर मौजूद रहे। सत्र में मॉडरेटर के रूप में संपादक रवि शंकर ने विषय पर भावपीठिका प्रस्तुत की। इसी क्रम में वक्ता डॉ. ओमप्रकाश पांडेय ने कहा कि स्व के आत्मबोध के लिए पहले भारत को समझना पड़ेगा। डॉ. बलदेव भाई शर्मा ने कहा कि बुद्धि की गति अनंत है। बुद्धि को संयमित रखने की जरूरत है। यही भारत का आत्मबोध है।

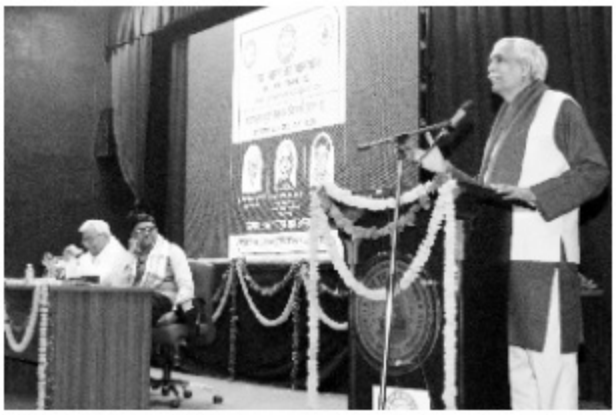

सत्र –5, विषय : विमर्श निर्माण में पारिस्थितिकी तंत्र

पत्रकार व लेखक विमर्श आयाम के पंचम एवं अंतिम सत्र में प्रबुद्ध वक्ताओं ने एजेंडा सेटिंग पर प्रकाश डाला। सत्र में अशोक श्रीवास्तव डीडी न्यूज के सीनियर कंसल्टिंग एडिटर, हरिश्चंद्र वर्णवाल वाइस प्रेसिडेंट, ब्लूक्राफ्ट डिजिटल फाउंडेशन और प्रणय कुमार लेखक एवं शिक्षाविद मौजूद रहे। सत्र में वक्ताओं ने भारत में आजादी से पहले और अभी तक के एजेंडा सेटिंग पर दर्शक-श्रोताओं के गंभीर प्रश्नों को उदाहरणों के जरिए जवाब दिया। इस तरह लेखक-पत्रकार आयाम, विचारों को हिलोड़ता, राष्ट्र समाज और इतिहास के प्रति नए तरह से सोचने को प्रेरित करता अगले वर्ष पुनः मिलने के प्रण के साथ संपन्न हो गया।

सोशल मीडिया विमर्श

सत्र -1, विषय : विमर्श स्थापित करने में सोशल मीडिया की भूमिका

सोशल मीडिया विमर्श आयाम के प्रथम सत्र में विमर्श स्थापित करने में सोशल मीडिया की भूमिका विषय पर अध्यक्षता शशि कुमार ने की। उन्होंने कहा कि आज के समय में सोशल मीडिया सूचना, विमर्श और सेवा का माध्यम है। स्वतंत्र पत्रकारिता का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया आज के युग में रोजगार का बहुत बड़ा केंद्र है। इसलिए सोशल मीडिया की उपयोगिता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। ऐसे में विमर्श को सार्थक बनाने के लिए सोशल मीडिया से बढ़कर और कुछ नहीं।

सत्र -2, विषय :सोशल मीडिया का सामाजिक जीवन पर प्रभाव

सोशल मीडिया का सामाजिक जीवन पर प्रभाव विषय पर मुख्य वक्ता टेमसुतुला इमसांग ने कहा कि यह एक डिजिटल युग है, जहां, हर घर में आज सोशल मीडिया के संचालन के साधन हैं, परंतु, इसके नुकसान भी हैं, जिनसे हमें सावधान रहने की आवश्यकता है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. पराग मधुकर धकाते ने कहा कि सोशल मीडिया संचार का सबसे अच्छा साधन है लेकिन आधी आबादी अभी भी इससे वंचित है। उन्होंने टारगेट ऑडियंस, इनफ्लुएंसर, फेक न्यूज इत्यादि विषयों पर युवाओं को जागृत किया और भारतीय संस्कृति की विश्व में बढ़ती लोकप्रियता पर भी अपनी बात रखी।

सत्र -3, विषय : सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

इस आयाम के तीसरे सत्र को संबोधित करते हुए वक्ता जिया मंजरी ने कहा कि आने वाला युग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का है और इसकी शुरुआत हो चुकी है। इसके कई फायदे हैं और कई नुकसान भी। हमें यह तय करना होगा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग हमें कब और कितना करना है? वहीं सत्र की अध्यक्षता शैलेश पांडेय ने की। उन्होंने युवाओं को सलाह देते हुए कहा कि किताबों से मित्रता सबसे बेहतर है।

सत्र -4, विषय : सोशल मीडिया में सनातन धर्म पर पक्ष-प्रतिपक्ष की स्थिति

17 दिसंबर को सोशल मीडिया विमर्श आयाम के चतुर्थ सत्र को संबोधित करते हुए वक्ता अनित्य श्रीवास्तव ने कहा कि हर व्यक्ति का सोशल मीडिया पर जीवन का बहुत अधिक समय देखने और चलाने में बीतता है। सोशल मीडिया पर कब, कहां, कैसे, क्यों और कितना लिखना है यह बहुत महत्वपूर्ण है। वहीं सत्र की अध्यक्षता करते हुए जे नंद कुमार ने कहा कि हमें सोशल मीडिया में कोई भी बात लिखने से पहले यह जांच कर लेना चाहिए कि वह सही है या नहीं। क्योंकि आज के समय में कोई भी चीज गोपनीय नहीं है। उन्होंने सभागार में बैठे लोगों से सोशल मीडिया पर धार्मिक बातें लिखने का आवाहन किया। और कहा कि अगर हम धर्म के बारे लिखते हैं तो राष्ट्र का निर्माण अपने आप हो जाएगा।

सत्र -5, विषय : सोशल मीडिया का आर्थिक व व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य

सोशल मीडिया विमर्श के पंचम सत्र की चर्चा शुरू करते हुए मुख्य वक्ता अपूर्वा सिंह ने कहा कि आज का यह युग आर्थिक युग है और कई युवा सोशल मीडिया के माध्यम से आज पैसे कमा रहे हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि सोशल मीडिया आज लोगों को जॉब भी प्रदान कर रहा है। वहीं सत्र के अध्यक्ष विकास पांडेय ने कहा कि आज सोशल मीडिया के द्वारा आप विभिन्न विषयों पर अपने विचारों को करोड़ों लोगों तक एक साथ साझा करने के साथ ही अच्छी आमदनी भी प्राप्त कर सकते हैं।

मीडिया शिक्षक एवं छात्र विमर्श

सत्र –1, विषय : नैरेटिव सेटिंग में सोशल मीडिया की भूमिका

प्रेरणा विमर्श –2023 में 16 दिसंबर को मीडिया शिक्षक एवं छात्र विमर्श का पहला सत्र नैरेटिव सेटिंग में सोशल मीडिया की भूमिका विषय पर केंद्रित रहा। इसमें माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति के जी सुरेश और टाइम्स नाउ, नवभारत (डिजिटल) की एसोसिएट एडिटर मेधा चावला ने उदाहरण के जरिए गंभीर चर्चा की। कुलपति के जी सुरेश ने भारतीय ज्ञान परंपरा में तथ्यों के महत्व को रेखांकित किया। इसी क्रम में पत्रकार मेधा चावला ने सोशल मीडिया के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि युवाओं की दुनिया सोशल मीडिया के आसपास सिमट रही है और ये उनके विचार निर्माण में मीडिया प्रमुख भूमिका निभा रहा है। सत्र में वरिष्ठ शिक्षाविद् प्रो. अजिताभ, डॉ. सुनील मिश्रा, डॉ. सुधीर, डॉ. नीरज कर्ण सिंह, डॉ. श्रद्धा पुरोहित, डॉ. रामशंकर आदि भी उपस्थित रहे। वहीं सत्र का संचालन शिक्षाविद एवं पत्रकार अमित शर्मा ने और समन्वयक का दायित्व पत्रकार एवं शिक्षाविद डॉ.अनिल निगम ने निर्वहन किया।

सत्र –2, विषय : एआई की दुनिया में भविष्य की पत्रकारिता

मीडिया शिक्षक एवं छात्र विमर्श आयाम में एआई की दुनिया में भविष्य की पत्रकारिता विषय पर आयोजित दूसरे सत्र में वरिष्ठ पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी और रुद्र प्रताप दूबे ने पत्रकारिता की दुनिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रभावों और बदलावों पर चर्चा की। उन्होंने चैट जीपीटी के आने के बाद भविष्य में लेखकों की भूमिका क्या होगी इस पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने कहा कि वर्तमान में विमर्श के लिए मौलिकता और रचनात्मकता ही सर्वोपरि होगी। इस सत्र का संचालन प्रो रितु दूबे तिवारी ने किया। डॉ रूही लाल ने सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

सत्र -3, विषय : मीडिया और लोकतंत्र: पत्रकारिता के बदलते मूल्य

मीडिया शिक्षक एवं छात्र विमर्श का तीसरा सत्र 'मीडिया और लोकतंत्रः पत्रकारिता के बदलते मूल्य' विषय पर प्रो (डॉ.) बलदेव भाई शर्मा, कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़ और प्रो (डॉ.) बृज कुठियाला, चेयरमैन, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा ने विभिन्न बिंदुओं पर प्रकाश डाला। मीडिया शिक्षक एवं छात्रों के सवालों का जवाब देते हुए डॉ. बलदेव भाई शर्मा ने इस बात पर जोर दिया कि लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका अहम है और एक पत्रकार को सर्वप्रथम एक अच्छा और जिम्मेदार नागरिक होना चाहिए तभी वो मीडिया के अपने दायित्वों का अच्छे से पालन कर सकता है। पत्रकारिता के नए रूप और नए प्लेटफॉर्म के दौर में पत्रकारिता के मूल्यों पर बात करते हुए डॉ. बृज किशोर कुठियाला ने कहा कि पत्रकारिता के मूल्यों को सुरक्षित रखने के लिए संचार और स्व का बोध होना जरूरी है, मीडिया के छात्रों को अपने पारंपरिक संचार पद्धतियों को समझना होगा और उसके अनुरूप पत्रकारिता को नयी दिशा देनी होगी। सत्र के दौरान विद्वान वक्ताओं ने श्रोताओं के सवालों और शंकाओं का समाधान किया। सत्र का समापन प्रो डॉ. अजिताभ ने धन्यवाद ज्ञापन से किया। सत्र का संचालन डॉ. मुक्ता मर्तोलिया ने किया।

नेशनल कांफ्रेंस

विषय : आजादी का अमृत महोत्सव : समाज, संस्कृति और संचार

नेशनल कांफ्रेंस के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता डॉ.(प्रो.) पवन सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, वाईएमसीए विश्वविद्यालय और डॉ. (प्रो.) शुचि यादव, एसोसिएट प्रोफेसर मौजूद थे। मंच का संचालन संयोजक प्रो. पूनम कुमारी ने किया। प्रथम दिवस में सात शोध पत्र प्रस्तुत हुए। नेशनल कॉन्फ्रेंस के प्रथम सत्र के अंत में डॉ. अरुण कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन कर इस सत्र का समापन किया। इस कॉन्फ्रेंस के समन्वयक डॉ. अनिल कुमार निगम, संयोजक पूनम कुमारी, सह-संयोजक डॉ. अरुण कुमार और प्रो. संजीव मिश्रा थे। कॉन्फ्रेंस पूर्णतः ऑफलाइन मोड में था जिसमें 100 से ज्यादा शोध सारांश ईमेल के माध्यम से प्राप्त किए गए थे।

वहीं 17 दिसम्बर को कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन सत्र में 100 से ज्यादा शिक्षक एवं छात्र मौजूद रहे। इस सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ.(प्रो.) संजीव शर्मा, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी और डॉ.(प्रो.) प्रमोद सैनी, प्रोफेसर, आई.आई.एम.सी.,नई दिल्ली थे। मंच का संचालन प्रो. वंदना यादव ने किया। इस सत्र में आठ शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। कॉन्फ्रेंस के अंत में दोनों वक्ताओं ने अपना सम्बोधन दिया तथा प्रत्येक प्रस्तुत शोध पत्र के बारे में अपनी राय भी रखी।

प्रेरणा चित्रभारती फिल्मोत्सव

सत्र –1, विषय : पटकथा लेखन

प्रथम सत्र की शुरुआत 16 दिसंबर को सुबह 10:30 बजे हुई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता मशहूर स्क्रिप्ट राइटर अद्वैता काला ने विद्यार्थियों को स्क्रिप्ट राइटिंग और कंटेंट राइटिंग का गुर सिखाया। उन्होंने कहा कि छात्रों को तीन बातों पर ध्यान देना चाहिए- ऑब्जर्वेशन, अनैलिसिस एंड लिसनिंग। उन्होंने आगे बताया कि हम कैसे एक स्क्रिप्ट को अच्छा बना सकते हैं जिससे आम जनता को जोड़ा जा सके और उनका मनोरंजन किया जा सके। वहीं इस सत्र में प्रोफेसर अखिलेश मिश्रा और अद्वैता काला को सम्मानित किया गया।

सत्र –2, विषय : फिल्म समीक्षा के तत्व

प्रेरणा चित्रभारती फिल्मोत्सव 2023 के द्वितीय सत्र में जाने माने पत्रकार अनंत विजय ने अपने भाषण की शुरुआत समाज में हिंदी साहित्य के योगदान से की। उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य के आए दिन इतने यूजर्स बढ़ रहे हैं कि देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी हमारा परचम लहरा रहा है। इस दौरान उन्होंने अपनी किताब 'अमेठी संग्राम' के बारे में भी चर्चा की। सत्र के दूसरे भाग में मशहूर डॉक्यूमेंट्री फिल्म मेकर श्याम मलिक ने वर्तमान के डिजिटल युग में डॉक्यूमेंट्री की प्रासंगिकता के बारे में बताया। श्याम मलिक ने छात्रों से संवाद करते हुए डॉक्यूमेंट्री फिल्म मेकिंग के विभिन्न आयामों पर चर्चा की।

सत्र –3, विषय : भारतीय संस्कृति एवं बॉलीवुड

गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में आयोजित फिल्म महोत्सव में कई प्रतिष्ठित हस्तियां शामिल हुईं और उन्होंने अपनी उपस्थिति से इस कार्यक्रम को और अधिक प्रभावशाली बनाया। इस सत्र के मुख्य वक्ता विष्णु शर्मा और अतुल गंगवार थे। विष्णु शर्मा ने आधुनिक फिल्मों की खूबियां और खामियां बताईं। उन्होंने बताया कि फिल्म निर्माताओं ने कैसे पहले की फिल्मों में चालाकी से भगवान के नकारात्मक चरित्र को दिखाकर नैरेटिव सेट कर रहे थे। दूसरी तरफ अतुल गंगवार ने फिल्म उद्योग की प्रकृति के बारे में बताया और कहा कि हिंदुओं की आस्था, नैतिकता, वेशभूषा को निशाना बनाया जाता रहा है। सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रोफेसर के जी सुरेश ने बताया कि फिल्म उद्योग मेहमान नहीं है। उन्होंने कुछ फिल्मों का उदाहरण भी दिया जिसमें एक खास सम्प्रदाय का महिमामंडन किया गया है।

सत्र -4, विषय : फिल्म निर्देशन एवं अभिनय

प्रेरणा चित्रभारती फिल्मोत्सव 2023 के चौथे सत्र का आयोजन 17 दिसंबर 2023 को किया गया। इसमें मुख्य अतिथि नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के निर्देशक चितरंजन त्रिपाठी थे। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी संस्कृति को महत्व न देते हुए भारतीय संस्कृति को ज्यादा महत्व देना चाहिए क्योंकि भरत मुनि की लिखी हुई किताब 'नाट्य शास्त्र' में स्पष्ट तौर पर भारतीय संस्कृति की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। सत्र की समाप्ति प्रश्न-उत्तर से की गई।

सत्र -5, पुरस्कार वितरण

फिल्मोत्सव के पांचवें सत्र में उत्तर प्रदेश के राज्य सूचना आयुक्त सुभाष चन्द्र सिंह ने फिल्मों के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव की चर्चा की। उन्होने अपने उद्बोधन में सूचना अधिकार के सदुपयोग की सलाह दी, जिससे एक न्यायपूर्ण और सकारात्मक समाज का निर्माण किया जा सके। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. नवीन कुमार ने की। सत्र में डॉक्यूमेंट्री और लघु फिल्म में तीन तीन पुरस्कार की घोषणा की गयी। डॉक्यूमेंट्री वर्ग में प्रथम पुरस्कार मुकेश कुमार को, दूसरा पुरस्कार अनुराग वर्मा को और डॉक्यूमेंट्री में तीसरा पुरस्कार लवकुमार सिंह को पुरस्कार राशि और मेडल दिया गया।

वहीं लघु फिल्म वर्ग में प्रथम पुरस्कार देवास कनल को, दूसरा पुरस्कार निशांत पंवर और तीसरा पुरस्कार हरिओम को दिया गया। प्रेरणा सिंह, निर्भय कुमार, छाया सिंह, शिप्रा कुशवाहा, आकांक्षा त्रिपाठी और मोहम्मद हमजा को विशेष सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मकर संक्रांति के विविध रूप

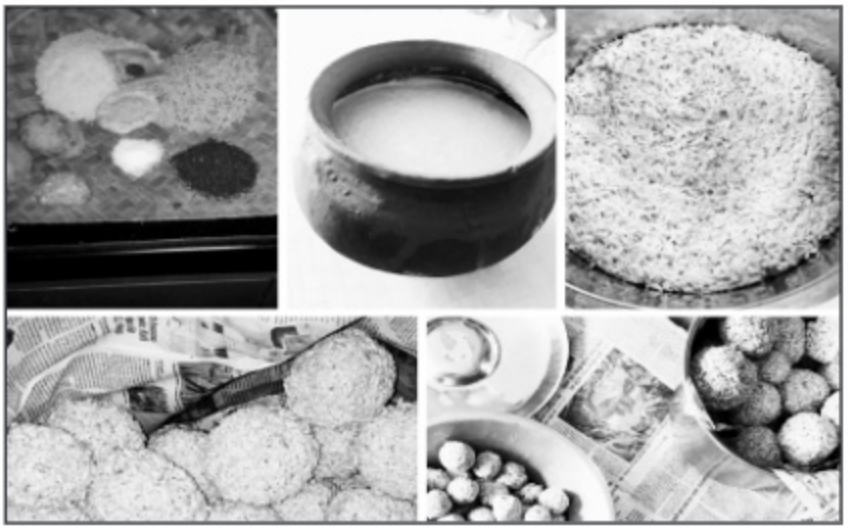

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर, ट्रैवलर

मकर संक्रांति एक महत्वपूर्ण पर्व है। इस दिन राशि चक्र में बदलाव होता है। गतिशीलता की यह आहट पृथ्वी पर हमें महसूस भी होती है। क्योंकि हमारी संस्कृति हर उस चीज का आभार दर्शाती है जिससे हमारे जीवन में बदलाव आता है। चाहे कृषि हो या ब्रह्मांड की सौर गतिविधियां। इन सबका आभार दर्शाने का दूसरा नाम ही सूर्य पर्व मकर संक्रांति है।

हमारी उत्सवधर्मी संस्कृति में पर्व या त्यौहार का विशेष स्थान है। वर्ष के हर महीने में कोई न कोई उत्सव आमजन को लोक कथाओं से संबद्ध कर उन्हें देश की सभ्यताओं और संस्कृति से परिचय कराता है। इसी क्रम में कुछ उत्सव किसी अंचल में मनाए जाते हैं, वहीं कुछ देश भर में। भले ही नाम अलग-अलग हों, लेकिन देवी देवताओं की पूजा करना, परिवार के साथ सामाजिक समारोहों में जाना, मेलों में खरीदारी करना और दान देना, भण्डारे करना, भ्रमण, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना और पर्यटन उसी के हिस्से हैं।

दीपावली और छठ के बाद सबसे महत्वपूर्ण पर्व के रूप में मकर संक्रांति का स्थान सर्वोपरि है। हर साल हम सभी 14 या 15 जनवरी को मकर संक्रांति मनाते हैं। देशभर के हर हिस्से में अलग-अगल नाम और रूप में मनाया जाने वाला यह त्यौहार भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि का सनातन काल से साक्षी रहा है। यह पर्व उत्तर भारत में मकर संक्रांति, तमिलनाडु में पोंगल, कर्नाटक, केरल और आंध्र प्रदेश में केवल संक्रांति, असम में माघ बिहू और भोगल बिहू और पंजाब व हरियाणा में लोहड़ी के रूप में मनाया जाता है। यह एकमात्र भारतीय त्यौहार है जो सौर कैलेंडर के एक निश्चित तिथि पर मनाया जाता है। जबकि अन्य सभी भारतीय पर्व चंद्र कैलेंडर के अनुसार मनाए जाते हैं। इस दिन गंगा सागर में स्नान का विषेश महत्व है तभी तो कहा जाता है - "सारे तीरथ बार बार, गंगा सागर एक बार।" मकर संक्राति को गंगा सागर (बंगाल की खाड़ी) में विलीन होने से पहले, गंगा जी में पवित्र डुबकी लगाने के लिए तीर्थयात्री देश विदेश से गंगासागर पहुंचते हैं। यहां 8 जनवरी से 16 जनवरी को लगने वाले मेले को गंगा सागर मेला कहते हैं। लेकिन डुबकी मकर संक्रांति को ही लगाई जाती है। उत्तरी भारत में इस दिन खिचड़ी खाना भी पर्व का अनन्य हिसा है। इस दिन गंगा, यमुना, सरयू और नर्मदा व अन्य पावन नदियों में स्नान करने से कई जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। कई शहरो में पतंगबाजी इस पर्व का एक अन्य पहलू है। जैसे अमृतसर में छोटी पतंग को गुड्डी कहते हैं और बड़ी पतंग को गुड्डा कहते हैं। यहां लोहड़ी को पतंगबाजी देखने लायक होती है। आसमान गुड्डे, गुड़ियों से भर जाता है। लोहड़ी में शाम को (13 जनवरी, पंजाब और उत्तर भारत का फसल उत्सव) आग जलाई जाती है। लोहड़ी की रात को सरसों का साग और गन्ने के रस की खीर घर में जरूर बनती है, जिसे अगले दिन मकर सक्रांति को खाया जाता है। इसके लिए कहते हैं

'पोह रिद्दी, माघ खादी' (पोष के महीने में बनाई और माघ के महीने में खाई) बाकि जो कुछ मरज़ी बनाओ, खाओ। आग जला कर अग्नि देवता को तिल, चौली (चावल) गुड़ अर्पित करते हैं। परात में मूंगफली, रेवड़ी और भुने मक्का के दाने, चिड़वा लेकर परिवार सहित अग्नि के चक्कर लगा कर थोड़ा अग्नि को अर्पित कर, प्रसाद खाते और बांटतें हैं। कड़ाके की सर्दी में आग के पास ढोलक पर उत्सव के अवसरों पर गाये जाने वाले अलिखित और अज्ञात रचनाकारों द्वारा रचित अनेकानेक लोकगीत सुनने को मिलते हैं। ये गीत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक परांपरा से सुरक्षित हैं। अगले दिन मकर संक्राति को आस पास के नदी सरोवर में स्नान करके, खिचड़ी और तिल का दान करते हैं और खिचड़ी और तिल के लड्डू खाये जाते हैं। स्वाद से खाते हुए बुर्जुग कवित्त बोलते हैं 'खिचड़ी तेरे चार यार घी, पापड़, दही, अचार।'

त्यौहार मनाने का तरीका पूरे देश में अलग-अलग रूप में होते हुए भी भाव एक ही रहता है। इसी क्रम में पूर्वोत्तर भारत में भोगाली बिहू मनाते हैं। यह मकर संक्रांति का उत्सव, माघ बिहू एक सप्ताह तक मनाया जाता है। मकर संक्रांति की पूर्व संध्या को लकड़ी बांस, फूस आदि से मेजी बनाई जाती है। वहां पारंपरिक भोज बनाये और खाए जाते हैं। मकर संक्रांति को सुबह मेजी की प्रदक्षिणा करके उसमें आग लगा दी जाती है। एक दूसरे को गमुछा (गमछा) भेंट करके प्रणाम करते हैं। चिड़वा, दहीं, गुड़ खाया जाता है। हुरुम (परमल), नारियल, तिल के लड्डू बनाते हैं। इस दौरान तिल नारियल का पीठा जरूर बनता है। भोगाली बिहू यानी माघ बिहू में अलाव जलाने और भोज खाने और खिलाने की परंपरा है।

नवान्न और संपन्नता लाने का त्यौहार पोंगल का इतिहास कम से कम 1000 वर्ष पुराना है। दक्षिण भारतीय, देश-विदेश में जहां भी रहते हैं, पोंगल उत्साह से मनाते हैं। इस त्यौहार का नाम पोंगल इसलिए है क्योंकि सूर्यदेव को जो प्रसाद अर्पित करते हैं वह पगल कहलाता है। तमिल भाषा में पोंगल का एक अर्थ है, अच्छी तरह उबालना। चार दिनों तक चलने

वाले पोंगल में वर्षा, धूप, खेतिहर मवेशियों की आराधना की जाती है। जनवरी में चलने वाले पहला पोंगल (15 जनवरी) को भोगी पोंगल कहते हैं, जो देवराज इन्द्र को समर्पित है। शाम को अपने घरों का पुराना कूड़ा, कपड़े लाकर आग लगा कर, उसके इर्द गिर्द युवा भोगी कोट्टम (एक प्रकार का ढोल) जिसे भैंस के सींग से बजाते हैं।

दूसरा पोंगल सूर्य देवता को निवेदित सूर्य पोंगल है। मिट्टी के बर्तन में नये धान, मूंग की दाल और गुड़ से बनी खीर और गन्ने के साथ, सूर्य देव की पूजा की जाती है। तीसरा मट्टू पोंगल तमिल मान्यताओं के अनुसार माट्टु भगवान शंकर का बैल हैं जिसे उन्होंने पृथ्वी पर हमारे लिए अन्न पैदा करने को भेजा है। इस दिन बैल, गाय और बछड़ों को सजा कर उनकी पूजा की जाती है। कहीं-कहीं इसे कनु पोंगल भी कहते हैं। बहने भाइयों की खुशहाली के लिए पूजा करतीं हैं। भाई उन्हें उपहार देते हैं।

चौथे दिन कानुम पोंगल मनाया जाता है। इस दिन दरवाजे पर तोरण बनाए जाते हैं। महिलाएं मुख्यद्वार पर रंगोली बनाती हैं। नये कपड़े पहनते हैं। रात को सामुदायिक भोज होता है। तमिल साहित्य के अनुसार श्री राम ने मकर संक्राति को पतंग उड़ाई थी और उनकी पतंग इन्द्रलोक में चली गई। अब सागर तट पर लोग पतंग उड़ाते हैं। तमिलनाडु से जुड़े होने से यही दिन आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक और केरल में संक्रांति के नाम से मनाया जाता है।

केरल में राजा राजशेखर ने अयप्पा को देव अवतार मान कर सबरीमलई में देवताओं के वास्तुकार विश्वकर्मा से डिजाइन करवा कर अयप्पा का मंदिर बनवाया। ऋषि परशुराम ने उनकी मूर्ति की रचना की और मकर संक्रांति को स्थापित की। आज भी यह प्रथा है कि हर साल मकर संक्रांति के अवसर पर पंडालम राजमहल से अयप्पा के आभूषणों को संदूक में रख कर, एक भव्य शोभा यात्रा निकाली जाती है। जो 90 किलोमीटर तीन दिन में सबरीमाला पहुंचती है। इस प्रकार मकर संक्रांति के माध्यम से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की झलक हमें अलग अलग रूपों में दिखाई देती है। जिसमें प्रकृति के साथ अन्य जीवों और सौर परिवर्तन की भी संबद्धता है।

देश के अन्य उत्सव

अंतरराष्ट्रीय पतंगबाजी महोत्सव(14 –15 जनवरी) साबरमती रिवरफ्रंट अहमदाबाद।

-बीकानेर ऊंट महोत्सव (13 से 15 जनवरी) इसकी शुरुआत जूनागढ़ किले के परिसर से ऊंटों के एक रंगीन यात्रा से होती है।

-दुसू महोत्सव (दुसू परब, मकर परब, पूस परब) (15 दिसम्बर से 15 जनवरी) झाड़खंड के कुड़मी और आदिवासियों का सबसे महत्वपूर्ण लोक उत्सव है। कुवांरी कन्याओं द्वारा बनाई दुसू देवी की मूर्ति एक माह तक प्रतिदिन शाम को पूजने के बाद विसर्जित कर दी जाती है।

-तिरुवल्लुवर दिवस तमिलनाडु सरकार ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के प्रसिद्ध तमिल कवि दार्शनिक, तिरूवल्लुर के सम्मान में 15 जनवरी को तिरूवल्लूर दिवस के रूप में मनाते हैं।

-गुरू गोविंद सिंह जयंती (17 जनवरी) सिख धर्म के दसवें और अंतिम गुरू गोविंद सिंह जी का जन्मोत्सव दुनिया भर के गुरुद्वारों में मनाया जाता है।

-तैलंग स्वामी जयंती (21 जनवरी) तैलंग स्वामी अपनी योग शक्तियों और लंबे जीवन के लिए प्रसिद्ध हैं।

-शाकंभरी देवी जयंती उत्सव (25 जनवरी) मां शाकंभरी देवी मंदिर सहारनपुर में मेले का आयोजन किया जाता है।

डीपफेक : गुमराह होता समाज

दिशा शर्मा
छात्रा, आईएमएस, गाजियाबाद

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के खतरे को लेकर बुद्धिजीवी जो चिंतित थे, उसके खतरनाक परिणाम शुरआती दौर में ही डीपफेक के रूप में दिखने लगे हैं। ऐसे में अंकुश के लिए इस पर गंभीर विमर्श और सख्त कानून की जरूरत है।

डीपफेक से तात्पर्य एक ऐसे फोटो, वीडियो या ऑडियो रिकॉर्डिंग से है, जिसमें एक मौजूदा छवि या वीडियो में एक व्यक्ति की जगह किसी दूसरे को लगा दिया जाए, इतनी समानता कि उनमें अंतर करना कठिन हो जाए कौन सही है और कौन फर्जी। हालांकि फर्जी फोटो, वीडियो, न्यूज और ऑडियो बनाना नया नहीं है, लेकिन डीपफेक ने मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी शक्तिशाली तकनीकों का लाभ उठाकर नजर और कान को धोखा देने हेतु दृश्य और ऑडियो सामग्री उत्पन्न करने में चुनौती बन रहे हैं। इस टेक्नोलॉजी पर आधारित ऐप्स काफी नुकसानदायक साबित हो रहे हैं, जिनके हालिया कुछ उदाहरणों में - गरबा खेलते प्रधानमंत्री का डीपफेक वीडियो और एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना की भी वीडियो है। डीपफेक एक पुराना कॉन्सेप्ट है जिसे फिल्मों में काफी उपयोग किया जाता रहा है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से डीपफेक के जरिए लोगों के सम्मान को अपूर्णनीय छति पहुंचायी जा रही है। ऐसा इसलिए, क्योंकि अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल का ऐक्सेस आसान हो गया है। आजकल स्कैमर्स डीपफेक का यूज लोगों को ब्लैकमेल करने और समाज में स्थापित आदर्श की छवि को खराब करने में कर रहे हैं।

मशीन लर्निंग बेशक सीखने और समझने में आसान नहीं है, लेकिन एआई ने अशिक्षित लोगों का काम आसान कर दिया है। इंटरनेट पर ऐसे ऐप्स मौजूद हैं जिसे डाउनलोड कर कोई भी व्यक्ति आसानी से डीपफेक वीडियो बना सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गरबा वाले डीपफेक वायरल वीडियो पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि डीपफेक समाज में आशांति के लिए बड़ा कारक साबित हो सकता है। साथ ही उन्होंने डीपफेक को भारतीय समाज के लिए एक बड़े खतरे के रूप में चिन्हित किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि मीडिया और आमजन को डीपफेक से सतर्क रहने की जरूरत है।

गौरतलब है कि जहां कभी डीपफेक वीडियो एक्टर्स की मदद करने के लिए फिल्मों में इस्तेमाल किया जाता था, आज वही डीपफेक वीडियो एक्टर्स की छवि खराब करने में भी इस्तेमाल हो रहा है। इसका सबसे ताजा उदाहरण है एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना का डीपफेक वीडियो। यह काफी चिंताजनक है। इस तरह हम सभी के लिए प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग नुकसानदायक सिद्ध हो रहा है। इस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। साथ ही डीपफेक वीडियो का इस्तेमाल लोगों को डराने धमकाने और अपमान करने के औजार के रूप में प्रचलित हो रहा है। इससे आने वाले समय में परेशानी ज्यादा बढ़ने वाली है। क्योंकि प्रसिद्ध व्यक्ति तो अपने साथ हुए डीपफेक धोखाधड़ी के बारे में जनता के आगे खुलकर बात रख सकता है, लेकिन एक आम व्यक्ति अपने साथ हुए धोखाधड़ी के मामले से डर जाता है। विशेषकर ऐसा व्यक्ति जो एआई के इस डीपफेक टेक्नोलॉजी से अनजान है। ऐसे में डीपफेक के द्वारा गलत सूचनाओं का प्रसार हो रहा है। स्कैमर्स को ब्लैकमेल करने और धोखा देने में मदद मिल रही है। आगामी चुनावों और जनमत को प्रभावित करने में इसका उपयोग संभावित है। इसके जरिए सोशल मीडिया पर लोग अश्लील कंटेंट आसानी से बनाकर समाज को दूषित कर रहे हैं। डीपफेक तकनीक, व्यक्तियों की गोपनीयता, गरिमा व प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा रही है। खासकर महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। क्योंकि वे इस प्रकार के दुर्भावनापूर्ण अनुप्रयोगों में सर्वाधिक लक्षित की जाती हैं। ऐसे में डीपफेक टेक्नोलॉजी के दुरुपयोगों पर अंकुश लगाने के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स को सख्त कदम उठाने होंगे। जिस भी यूजर द्वारा ऐसी डीपफेक वीडियो अपलोड किया जाएं उसके खिलाफ सख्त करवाई हो।

ऑनलाइन प्लेटफॉर्मस को सबसे ज्यादा युवक ही इस्तेमाल कर रहे हैं ऐसे में सरकार को ज्यादा नजर रखने और कानून मजबूत बनाने की आवश्यकता है। स्कूल और कॉलेज में भी एआई को लेकर विशेष क्लास लगनी चाहिए, जिससे छात्र शुरुआत में मशीन लर्निंग और एआई के प्रभाव व दुष्प्रभाव से परिचित हो जाएं। क्योंकि एआई टेक्नोलॉजी तो केवल निर्देशों पर निर्भर है किंतु निर्देश देने वाले को अपने मौलिक कर्तव्यों को ध्यान में रखना होगा। ■

विशेष समाचार

21 नवम्बर : सतत पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए शिलांग, मेघालय में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मार्ट के 11वें संस्करण का उद्घाटन।

22 नवम्बर : कर्नल सुनीता, सशस्त्र सेना के दिल्ली कैंट स्थित सबसे बड़े रक्त संचार केन्द्र, सशस्त्र सेना ट्रांसफ्यूजन सेंटर की कमान संभालने वालीं पहली महिला अधिकारी।

23 नवम्बर : प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश के मथुरा में श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना की।

24 नवम्बर : वर्ष 2024 के लिए अंतरराष्ट्रीय चीनी संगठन का भारत अध्यक्ष बना।

25 नवम्बर : स्वदेशी रूप से डिजाइन, विकसित और निर्मित दो सीटों वाले लड़ाकू विमान एलसीए तेजस में प्रधानमंत्री ने उड़ान भरी।

26 नवम्बर : पहली बार आयोजित होने वाले खेलो इंडिया पैरा गेम्स 2023 के प्रतीक चिन्ह (लोगो) और शुभंकर उज्ज्वला लॉन्च।

27 नवम्बर : प्रधानमंत्री मोदी ने आंध्र प्रदेश के तिरुमाला में श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में प्रार्थना की।

28 नवम्बर: सिनेमा में उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध हॉलीवुड अभिनेता एवं निर्माता माइकल डगलस को प्रतिष्ठित सत्यजीत रे लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित।

29 नवम्बर : भारत की जैव अर्थव्यवस्था मात्र 10 अरब डालर थी, आज यह 120 अरब डालर है - केंद्रीय मंत्री डॉ.जितेन्द्र सिंह।

30 नवम्बर : एम्स, देवघर (झारखंड) में 10,000वां जन औषधि केंद्र राष्ट्र को समर्पित।

1 दिसम्बर : संयुक्त अरब अमीरात के दुबई में 'ट्रांसफॉर्मिंग क्लाइमेट फाइनेंस' पर सीओपी-28 प्रेसीडेंसी सत्र में पीएम ने भाग लिया।

2 दिसम्बर : राजकोषीय लाभ के लिए आर्थिक राष्ट्रवाद से समझौता नहीं किया जाना चाहिए -जगदीप धनखड़, उपराष्ट्रपति।

3 दिसम्बर : जैव- अर्थव्यवस्था के साथ नैनो-विज्ञान भारत को 5 खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था महत्वपूर्ण - केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह।

4 दिसम्बर : महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग स्थित राजकोट किले में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा का अनावरण प्रधानमंत्री ने किया।

5 दिसम्बर : 11,53,079 इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री पर एक दिसम्बर तक इलेक्ट्रिक वाहन निर्माताओं को 5,228.00 करोड़ रुपये की सब्सिडी दी गई।

6 दिसम्बर : यूनेस्को की अमूर्त विरासत सूची में गरबा नृत्य शामिल किया गया।

7 दिसम्बर : उड़ान योजना के तहत 9 हेलीपोर्ट और 2 वाटर एयरोड्रम सहित 76 हवाई अड्डों को जोड़ने वाले 517 हवाई मार्ग शुरू हुए।

8 दिसम्बर : वर्ष 2025 तक, पीएम-दक्ष योजना के तहत 1,69,300 प्रशिक्षुओं को मिलेगा प्रशिक्षण।

9 दिसम्बर : वर्ष 2023–24 में पैकेजिंग संबंधी कार्यों में जूट के उपयोग को अनिवार्य करने के फैसले का प्रधानमंत्री ने स्वागत किया।

10 दिसम्बर : राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के 75 वर्ष पूरे होने पर गोवा से कोच्चि तक महासागर नौकायन अभियान का पहला चरण संपन्न।

11 दिसम्बर: अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बारे में सर्वोच्च न्यायालय का फैसला ऐतिहासिक, जो 5 अगस्त 2019 को भारत की संसद द्वारा लिए गए निर्णय को संवैधानिक रूप से बरकरार रखता है - प्रधानमंत्री।

12 दिसम्बर : 9 मई 2015 को शुरू अटल पेंशन योजना में 6 करोड़ से अधिक नामांकन।

13 दिसम्बर : सरकार भारत की विशाल सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध - जी. किशन रेड्डी, केंद्रीय मंत्री।

14 दिसम्बर : एसपी कॉलेज, पुणे में सबसे बड़ी पठन गतिविधि गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल।

15 दिसम्बर : प्रेरणा विचार प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा/ मेरठ प्रांत प्रचार विभाग एवं जनसंचार एवं मीडिया अध्ययन विभाग गौतम बुद्ध विवि., ग्रेटर नोएडा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय प्रेरणा विमर्श-2023 कार्यक्रम का उद्घाटन नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ से। उद्घाटन सत्र को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख रामलाल, सांसद मनोज तिवारी एवं प्रेरणा मीडिया संस्थान की अध्यक्षा प्रीति दादू ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया।

16 दिसम्बर : प्रेरणा विमर्श - 2023 के दूसरे दिन, पत्रकार एवं लेखक विमर्श, सोशल मीडिया विमर्श, मीडिया शिक्षक एवं छात्र विमर्श तथा नेशनल कांफ्रेंस और प्रेरणा चित्र भारती फिल्मोत्सव आयाम के विभिन्न सत्र आयोजित हुए।

17 दिसम्बर : प्रेरणा विमर्श -2023 का समापन समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार रुबिका लियाकत को प्रेरणा विमर्श -2023 के सम्मान से सम्मानित किया गया।

18 दिसम्बर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कोल्हापुर में कुलस्वामिनी अंबाबाई का दर्शन कर आशीर्वाद लिया।

19 दिसम्बर : कोरबा, छत्तीसगढ़. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्र के जीवन दर्शन और समाज राष्ट्र के लिए किए कार्य को लेकर दुनिया भर में भारत की अपनी विशेष पहचान है।

20 दिसम्बर : भाषा लोगों के दिलों के साथ-साथ समाज को जोड़ने का प्रमुख साधन है - डॉ. मोहन भागवत, सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। ■

1. कनक भवन कहां स्थित है?

(A) अयोध्या (B) वाराणसी

(C) मथुरा (D) उज्जैन

2.अयोध्या में रामजन्म भूमि मंदिर की शैली है?

(A) द्रविण शैली (B) नागर शैली

(C) बेसर शैली (D) आग्नेय शैली

3. भगवान विष्णु का मत्स्य अवतार हुआ था?

(A) सतयुग (B) त्रेतायुग

(C) द्वापर (D) कलियुग

4.जैन धर्म के 24वें तीर्थांकर थे।

(A) ऋषभदेव (B) अजितनाथ

(C) सम्भवनाथ (D) भगवान महावीर

5. विनय-पत्रिका रचना है।

(A) रामधारी सिंह दिनकर (B) जयशंकर प्रसाद

(C) तुलसीदास (D) रामचंद्र शुक्ल

6. आर्यों की भाषा क्या थी?

(A) हिन्दी (B) ग्रीक

(C) लैटिन भाषा (D) संस्कृति

7. महाकुम्भ मेला कितने वर्ष बाद लगता है?

(A) 10 (B) 11

(C) 12 (D) 14

8.देवताओं के गुरु हैं?

(A) नारद (B) अग्निदेव

(C) शुक्राचार्य (D) वृहस्पति

9.मिथिला से किस राजा का संबंध है?

(A) जनक (B) दशरथ

(C) अशोक (D) बिम्बिसार

10. मकर संक्रांति का संबंध है।

(A) सूर्य (B) चंद्रमा

(C) वृहस्पति (D) मंगल

उत्तर

1. (A), 2.(B), 3.(A), 4.(D), 5.(C), 6.(D), 7.(C), 8. (D) , 9. (A), 10. (A)

हर दिन पावन

तिथि	विवरण
हर दिन पावन	
1 जनवरी, 1890	डॉ. सम्पूर्णानन्द जयन्ती (साहित्यकार, लेखक, पत्रकार, स्वतन्त्रता सेनानी)
2 जनवरी, 1918	माधवराव देशमुख जयन्ती (अखंड कर्मयोगी)
3 जनवरी, 1932	रघुनंदन प्रसाद जयन्ती, प्रचारक
4 जनवरी, 1970	हरिबाबा पुण्यतिथि, कर्मयोगी
5 जनवरी, 2007	स्वामी शिवचरण लाल पुण्यतिथि (प्रचारक एवं वीर रस के प्रसारक)
6 जनवरी, 2008	डॉ. प्रमोदकरण सेठी (जयुपर फुट के निर्माता)
7 जनवरी, 1924	योगेन्द्र बाबा जयन्ती (प्रचारक, कलाकारों के कलाकार)
8 जनवरी, 2007	चन्द्रकांत भारद्वाज पुण्यतिथि (राष्ट्र आराधन के स्वर)
9 जनवरी, 1925	तिलकराज कपूर जयन्ती, प्रचारक
10 जनवरी, 1967	डॉ. राधाविनोद पाल पुण्यतिथि (साहसी न्यायाधीश)
11 जनवरी, 1926	राजा विजयभूषण सिंहदेव जयन्ती (वनवासियों के हितैषी)
12 जनवरी, 1863	स्वामी विवेकानंद जयन्ती (विश्व भर में वेदान्त का जयघोष किया)
13 जनवरी, 1926	शक्ति सामन्त जयन्ती (प्रेम कथाओं के फिल्मकार)
14 जनवरी	मकर संक्रांति
15 जनवरी, 1911	वीरेन्द्र वीर जयन्ती (स्वतन्त्रता सेनानी, पत्रकार)
16 जनवरी, 1918	ओमप्रकाश मैंगी जयन्ती (प्रांत संघचालक, अखण्ड कर्मयोगी)
17 जनवरी, 2013	रणछोड़दास रबारी 'पागी' पुण्यतिथि (भारतीय सेना के मार्गदर्शक)
18 जनवरी, 1842	महादेव गोविन्द रानाडे जयन्ती (समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी)
19 जनवरी, 1944	क्रांतिवीर निर्मलकांत राय का प्रेरक प्रसंग
20 जनवरी, 1825	गेंदसिंह बलिदान दिवस (छत्तीसगढ़ के अमर बलिदानी)
21 जनवरी, 1922	ज्योतिस्वरूप जयन्ती (चलते-फिरते संघकोश)
22 जनवरी, 1824	अजीजन बाई जयन्ती (क्रांतिकारी नृत्यांगना)
23 जनवरी, 1897	नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती
24 जनवरी, 2003	भीमसेन चोपड़ा पुण्यतिथि (वनवासी कल्याण आश्रम के स्तम्भ)
25 जनवरी, 1824	मधुसूदन दत्त जयन्ती, कवि
26 जनवरी, 1915	रानी गाइडिन्ल्यू जयन्ती (स्वतन्त्रता सेनानी) / गणतंत्रता दिवस
27 जनवरी, 1989	श्याम नारायण पाण्डेय पुण्यतिथि (शौर्य एवं पराक्रम गीत के प्रणेता)
28 जनवरी, 1928	एम.ए कृष्णन जयन्ती (बाल गोकुलम् के संस्थापक)
29 जनवरी, 1922	प्रो. राजेन्द्र सिंह जयन्ती (रज्जू भैया) -राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चतुर्थ सरसंघचालक
30 जनवरी, 1926	लक्ष्मणराव तराणेकर जयन्ती (स्वयं सेवक, नींव के पत्थर)
31 जनवरी, 1923	वनबन्धु मदनलाल अग्रवाला जयन्ती (स्वयंसेवक, सक्रिय समाजसेवी)

ऑनलाइन प्रतियोगिता

(रविवार, 14 जनवरी 2024, सायं 5.00 बजे)

प्रिय पाठकगण आपको यह जानकर हर्ष होगा कि प्रेरणा विचार मासिक पत्रिका द्वारा पाठकों के लिए एक ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित होगी। जिसमें जुलाई 2023 से दिसम्बर 2023 (6 माह) की पत्रिकाओं में से प्रश्न पूछे जाएंगे। उन्हीं अंकों में से पूछे गए प्रश्नों का सही उत्तर देना होगा। परीक्षा ऑनलाइन आयोजित होगी।

- सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता पत्र (ई-प्रमाण पत्र) मिलेगा।
- प्रथम तीन स्थान पर रहने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, पुरस्कार एवं स्मृति चिन्ह दिया जाएगा।

नोट :- ऑनलाइन प्रतियोगिता 14 जनवरी, 2024 सायं 5.00 से 5.30 बजे आयोजित होगी। जिसके बारे में अधिक जानकारी के लिए 9354133708 नम्बर पर संपर्क करें।

पाठकगण प्रेरणा विचार पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या वाट्सएप नम्बर (9354133708) पर भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

प्रेरणा विमर्श – 2023 'स्व' भारत का आत्मबोध

समापन समारोह

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा एवं गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के जनसंचार व मीडिया अध्ययन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रेरणा विमर्श – 2023 के अंतिम दिन 17 दिसंबर को समापन समारोह में विभिन्न वक्ताओं ने अपने प्रबुद्ध विचारों से अभिभूत किया। समापन समारोह में प्रज्ञा प्रवाह के अखिल भारतीय संयोजक जे नंद कुमार ने कहा कि 'स्व' के आत्मबोध से ही भारत विश्व गुरु बनेगा, क्योंकि भारत का 'स्व' ही विश्वकल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा। साथ ही समापन समारोह में वरिष्ठ पत्रकार रुबिका लियाकत को प्रेरणा सम्मान 2023 से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान मुझे देश विरोधियों से लड़ने की ताकत देता है। इस दौरान प्रेरणा विचार पत्रिका के स्व भारत का आत्मबोध विशेषांक का विमोचन हुआ। प्रेरणा विमर्श के समापन समारोह में राज्यसभा सांसद कांता कर्दम, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय ग्रेटर नोएडा के कुलपति प्रो. रवीन्द्र कुमार सिन्हा, सूर्य प्रकाश टोंक (संघचालक, पश्चिमी उत्तर प्रदेश), प्रेरणा मीडिया विमर्श-2023 के अध्यक्ष प्रो. नरेन्द्र तनेजा, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास की अध्यक्षा प्रीति दादू, अनिल त्यागी, सुरभि भदौरिया सहित देशभर से आए वरिष्ठ पत्रकार, मीडिया संस्थानों के शिक्षक एवं छात्र, छात्राएं समेत गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम साहित्योत्सव के दौरान जागृति प्रकाशन, किताब घर, सुरुचि प्रकाशन, माधव प्रकाशन, प्रभात प्रकाशन, प्रेरणा प्रकाशन, दीनदयाल स्वदेशी केंद्र एवं लोकहित प्रकाशन ने हिस्सा लिया।

वरिष्ठ पत्रकार एवं एंकर रुबिका लियाकत

समापन समारोह में मंचासीन अतिथिगण

सभागार में उपस्थित श्रोतागण

प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय संयोजक, जे नन्द कुमार

प्रेरणा सम्मान-2023 से सम्मानित रुबिका लियाकत

प्रेरणा विचार पत्रिका का विमोचन

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

NIRALA WORLD

NIRALA TRIE BY NIRALA WORLD

NIRALA WORLD RESIDENCY PRIVATE LIMITED

Corp. Office: H-61, 1st Floor, Sec-63, Noida (U.P.) 201301 | Site Office : GH-03A, Sector-2, Gr. Noida (West), U.P.

For Sales enquiries: 9212131476

Tel.: 0120-4823000, Email: sales@niralaworld.com, Web.: www.niralaworld.com